वर्ष : 27 | अंक : 42 | website:www.chetnamanch.com | नोएडा, शनिवार, 01 फरवरी, 2025 | Chetna Manch | Chetna Manch | मूल्य 2.00 रु. | पेज: 8

आज की खबर आज ही

जनाकांक्षाओं का सजग प्रहरी

चेतना मंच

मोदी सरकार का छप्परफाड़ बजट

आम बजट : 2025-2026

कुल खर्च: 50.65 लाख करोड़

कुल आय: 34.96 लाख करोड़

बजट में क्या हुआ सस्ता

- जीवन रक्षक दवाएं
- मेडिकल उपकरण
- ईवी और मोबाइल बैट्री
- एलईडी व एलसीडी टीवी
- समुद्री उत्पाद
- बुनकरों के बनाए कपड़े
- चमड़े से बने सामान व कपड़े
- फ्रोजन फिश पेस्ट

मिडिल क्लास की लगी लॉटरी | बुजुर्गों को टैक्स में बड़ी छूट | LCD, LED, टीवी, जीवन रक्षक दवाएं सस्ती | बीमा क्षेत्र में 100% FDI

नई दिल्ली (एजेंसी) केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आज देश का आम बजट पेश किया। उन्होंने लगातार आठवां बजट पेश किया है। बजट में मोदी सरकार ने दिल्ली में होने वाले विधानसभा चुनाव और बिहार में होने वाले विधानसभा चुवाव को देखते हुए छप्पर फाड़ ऐलान किये हैं। बजट में मिडिल क्लॉस की लाटरी लगी है। वित्तमंत्री ने सालाना 12 लाख की कमाई पर किसी भी तरह के टैक्स की छूट का बड़ा किया है। इसके अलावा वरिष्ठ नागरिकों के लिए टैक्स की छूट 50 हजार से बढ़ाकर 1 लाख रूपये कर दी गई है। साथ ही अब दो से चार सालपुराना आरटीआई भी भरा जा सकेगा। वित्तमंत्री ने टीडीएस की सीमा बढाकर 10 लाख रूपये कर दी है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि यह बजट विकास की रफ्तार बढ़ाने, समग्र विकास करने, निजी क्षेत्र में निवेश को बढ़ाने, घरेलू संवेदनाओं को मजबूत करने और मध्यम वर्ग की खर्च करने की क्षमता को बढ़ाने की कोशिशों का हिस्सा है। बजट 2025-26 विकास की रफ्तार बढ़ाने, समग्र विकास, निजी क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देने के लिए, घरेलू संवेदनाओं को मजबूत करने के लिए, मध्यम वर्ग की खर्च करने की क्षमता को बढ़ाने के बिंदुओं पर आधारित है।

बजट में प्रस्तावित विकास उपाय, गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी को ध्यान में रखते हुए 10 क्षेत्रों को कवर किया गया है। इनमें कृषि विकास और उत्पादकता को गति देना, ग्रामीण संपन्नता और अनुकूलन निर्माण, समावेशी प्रगति के पथ पर सबको साथ लेकर चलने, भारत में विनिर्माण बढ़ाने और मेक इन इंडिया को आगे ले जाने, एमएसएमई को मदद देने, रोजगार और विकास को समर्थ बनाने, जनता-अर्थव्यवस्था और नवाचार में निवेश करने, ऊर्जा आपूर्तियां सुनिश्चित करने, निर्यात को बढ़ावा देने और नवाचार को पोषित कर- कृषि योजनाओं से 1.7 करोड़ किसानों को

बजट में की गई बड़ी घोषणाएं

- स्टार्टअप के लिए लोन 10 करोड़ से बढ़ाकर 20 करोड़ रुपए किया जाएगा। गारंटी फीस में भी होगी कमी।
- MSME के लिए लोन गारंटी कवर 5 करोड़ से बढ़ाकर 10 करोड़, 1.5 लाख करोड़ तक का कर्ज मिलेगा।
- पहाड़ी इलाकों में बनेंगे छोटे एयरपोर्ट
- एक लाख अधूरे घर बनाए जाएंगे
- राज्य खनन सूचकांक बनाएंगे
- 20 हजार करोड़ रुपये का परमाणु ऊर्जा मिशन
- नई उड़ान योजना से जोड़ने 200 नए शहर
- बिहार के लिए कई बड़े ऐलान किए गए हैं पटना एयरपोर्ट की क्षमता बढ़ाई जाएगी. उड़ान योजना के लिए बढ़ेगी कनेक्टिविटी. नए ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट खुलेंगे
- न्यूक्लियर एनर्जी के लिए आरएंडडी को 20,000 करोड़ रुपये आवंटित
- जल जीवन मिशन 2028 तक बढ़ाया जाएगा
- मेडिकल कॉलेज में 75000 सीट
- अर्बन चैलेंज फंड के लिए एख लाख करोड़ आवंटित. शहरी गरीबों की आय बढ़ाने पर जोर
- 3 AI एक्सीलेंस सेंटर खुलेंगे.
- देश में 200 डे केयर कैंसर सेंटर खुलेंगे.
- IIT पटना को वित्तपोषित किया जाएगा.
- MSME को 10 करोड़ रुपये तक का कर्ज.
- भारतीय खिलौनों के लिए सपोर्ट स्कीम. वैश्विक खिलौना केंद्र खोलने की योजना. स्टार्टअप को 20 करोड़ रुपये का कर्ज.
- किसान क्रेडिट की लिमिट पांच लाख रुपये. सस्ते ब्याज पर किसानों को पांच लाख का कर्ज. कपास किसानों को पांच साल का पैकेज.
- असम में यूरिया प्लांट का गठन होगा. 12.7 लाख मीट्रिन टन की सालाना क्षमता वाला यूरिया प्लांट खुलेगा। **(शेष पृष्ठ-3 पर)**

उत्तर प्रदेश युवा व्यापार मंडल ने बजट को सराहा

नोएडा। उत्तर प्रदेशयुवा व्यापार मंडल के प्रदेश कार्यालय में पदाधिकारी तथा सदस्यों ने आज2025 का आम बजट बजट देखा। प्रदेश अध्यक्ष विकास जैन ने बजट को व्यापारियों का बजट बताया।

उन्होंने कहा कि केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आम लोगों के साथ-साथ व्यापारियों के भी राहत दी है। टैक्स में 12 लाख रुपया तक की छूट देकर केंद्र सरकार ने आज मध्यम वर्ग को खुश कर दिया है। सीनियर सिटीज़न को छूट दी गई है। उन्होंने केंद्रीय वित्त मंत्री का आभार व्यक्त किया है।

इस मौके पर प्रदेश अध्यक्ष विकास जैन, प्रदेश चेयरमैन नवनीत गुप्ता, प्रदेश मंत्री अमित गोयल, प्रॉपर्टी डीलर आकाश चौहान व महावीर कुमार ने बजट को काफी संतोषजनक बताया।

धमाकों से दहला गाजियाबाद, गैस सिलेंडरों में लगी भीषण आग

गाजियाबाद (चेतना मंच)। गाजियाबाद थाना टीला मोड़ क्षेत्र के दिल्ली वजीराबाद रोड भोपुरा चौक के पास गैस सिलेंडर से भरे हुए एक ट्रक में आग लगने के कारण हुए धमाकों से गाजियाबाद कई इलाके गूंज उठे।

बिजली के तारों में सिलेंडर लगने से जगह-जगह तार टूट गए जिसकी वजह से पुलिस को ट्रैफिक रोकना पड़ा। वहीं धमाके की वजह से ट्रांसफार्मर में आग लग गई। कई ट्रांसफार्मर जल गए जिसके कारण लोगों के घरों में अंधेरा हो गया। वही ओवरहेड स्टैंड से पानी की सप्लाई भी बंद हो गई। आज सुबह 4 : 30 पर ट्रक में आग लगी जिसकी सूचना फायर विभाग को मिली फायर सर्विस की गाड़ी मोके पर पहुची लगभग 50 से 60 सिलिंडर ब्लास्ट हो गए जिनके टुकड़ा दूर-दूर तक जाकर लगभग 200 मीटर की दूरी पर गिरा जिसकी वजह से लोगों में दहशत फैल गई।

लोग अपने घरों को छोड़कर खाली स्थान पर भाग गए यही नहीं ऊपर से गुजर रही 33 केवीए और 11000 केवीए की लाइन टूट कर सड़क पर गिर गए। वहीं पास में फर्नीचर की दुकान थी जिममें आग लग गई। पेट्रोल पंप के पास लगा ट्रांसफार्मर में आग लगकर ट्रांसफर नीचे गिर गया उसके नीचे टायर पंचर की दुकान थी जो दुकान में भी आग लग गई। **(शेष पृष्ठ-3 पर)**

सेक्टर-12 में नि:शुल्क हेल्थ कैम्प 9 फरवरी को

नोएडा। 9 फरवरी को सेक्टर-12 के बारातघर में नि:शुल्क हेल्थ कैंप लगेगा। इस कैम्प में लोग अपनी नि:शुल्क जांच कराकर डाक्टरों से परामर्श ले सकेंगे। इस कैंप का आयोजन नोएडा लोक मंच द्वारा किया जा रहा है।

नोएडा लोकमंच के महासचिव महेश सक्सेना ने बताया कि 9 फरवरी को सुबह 10बजे से हेल्थ कैम्प शुरू होगा। जिसमें मेट्रो हॉस्पीटल के डाक्टरों द्वारा लोगों की जांच की जाएगी तथा उन्हें परामर्श व दवाईयां दी जाएंगी। इस कैंप में हदयरोग विशेषज्ञ, आंखों के विशेषज्ञों तथा महिला रोगों के डाक्टरों द्वारा जांच की जाएगी।

मध्यम वर्ग के लिए राहत का बजट : उमेश त्यागी

नोएडा (चेतना मंच)। भाजपा के जिला महामंत्री उमेश त्यागी ने आज पेश किए गए बजट को सभी वर्ग के लिए राहत का बजट बताया है। आज वित्त मंत्री निर्मल सीतारमण ने लोक सभा में 2025-2026 बजट पेश किया है। यह बजट बहुत ही सराहनीय बजट है। जिसमें सभी को राहत दी गई है। टैक्स स्लैब में 12 लाख टैक्स फ्री करने पर मध्यवर्ग लोगो को बहुत राहत मिलेगी।

एलईडी,मोबाइल फोन,ईवी कार बुजुर्गों के लिए राहत ये बजट बहुत ही सराहनीय हे इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं वित मंत्री निर्मला सीतारमण जी को बहुत बहुत बधाई इतना अच्छा बजट पेश करने के लिए।

मोबाइल टॉवरों के आरआरयू चुराने वाले बदमाशों से मुठभेड़

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। शहर के मोबाइल टॉवरों से आरआरयू चोरी करने वाले बदमाशों से पुलिस की मुठभेड़ हो गई। गोली लगने से दो बदमाश घायल हुए हैं। घायल बदमाशों के पास से चार आरआरयू बरामद किए गए हैं। बदमाशों के खिलाफ नोएडा दिल्ली और गाजियाबाद के अलग-अलग थाने में लूट, चोरी और हत्या के प्रयास समेत अन्य धाराओं में 30 से अधिक मुकदमे दर्ज हैं। **(शेष पृष्ठ-3 पर)**

RADIANT ACADEMY
(AFFILIATED TO CBSE)
B-180, sector-55, noida Ph: 120-4314312/ 6514636
Mob. : 9350251631/ 9674710772 E-mail: radiantacademynoida@yahoo.com
RADIANT ACADEMY
(J.H.S.) (AFFILIATED TO CBSE)
Sorkha, Sector- 115, noida on Fng Ph: 120- 6495106,
Mob. : 9873314814/ 9674710772 E-mail: radiantacademysorkha@yahoo.com
Let your child Explore the world with us in a Secure Environment!
We are a Co-Educational Medium Senior Secondary School
imparting quality education since the last 20 years.
FROM ADMISSION OPEN NURSERY TO CLASS XI Transport Facility Available
FACILITIES AVAILABLE AT SCHOOL : ●Highly Qualified And Trained Faculty well Quipped Labs ●CCTV Controlled Environment ●Activity Based Learning ● Well Equipped Library ●GPS Enable Buses

पूर्वांचल के किसी कार्यकर्ता के सिर बंधे भाजपा अध्यक्ष का सेहरा!

नोएडा (चेतना मंच)। भारतीय जनता पार्टी में अध्यक्ष पद को लेकर चल रहा घमासान अभी थमा नहीं है। सभी दावेदार जहां अध्यक्ष पद का सेहरा बंधवाने का ख्वाब देख रहे हैं तो कुछ अपने सियासी आकाओं की कई दिनों से परिक्रमा कर रहे हैं। अध्यक्ष पद की घोषणा 8 फरवरी के बाद संभव है।

नोएडा में ब्राहमण, ठाकुर, दलित, ओबीसी तथा वैश्य समाज के कार्यकर्ता को अध्यक्ष बनाये जाने के दावे किए जा रहे हैं। वहीं यह घमासान अब पश्चिमी उप्र, उत्तरांचल तथा पूर्वांचल के बीच में भी बढ़ गया है।

पूर्वांचल के रहने वालों की मांग है कि नोएडा विधानसभा क्षेत्र में पूर्वांचल की सर्वाधिक संख्या है। लोकसभा चुनाव में डा. महेश शर्मा तथा नोएडा के

सांसद व विधायक की ऐतिहासिक जीत में पूर्वांचल वोटरों का अहम योगदान

पं. अशोक मिश्रा

राजकुमार झा

विधायक पंकज सिंह की ऐतिहासिक जीत में सर्वाधिक योगदान पूर्वांचलवासियों का रहा है। पूर्वांचल का अधिकांश मतदाता भाजपा के पक्ष में ही मतदान करता है। उनकी प्रबल मांग है कि नोएडा में अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी किसी पूर्वांचल के भाजपा कार्यकर्ता को ही सौंपी जाए ताकि पूर्वांचल का वोट बैंक एकजुट बना रहे तथा आगामी 2027 के चुनाव में भी नोएडा की सीट ऐतिहासिक मतों से भाजपा की झोली में डाली जा सके।

बता दें कि जिन 35 दावेदारों ने अध्यक्ष पद के लिए आवेदन किया था उसमें पूर्वांचल से जुड़े दो ही नाम सामने आए हैं। एक है अशोक मिश्रा तथा दूसरे राजकुमार झा। पं. अशोक मिश्रा भाजपा के पुराने कर्मठ व सक्रिय कार्यकर्ता रहे हैं। वे वर्तमान में फेनरवा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष के अलावा सेक्टर-11 धवलगिरि आरडब्लूए के अध्यक्ष भी हैं। इसके पूर्व वे सरस्वती शिशु मंडल के अध्यक्ष रहे हैं। इलाहाबाद के निवासी अशोक मिश्रा की पूर्वांचल समाज में खासी लोकप्रियता तथा स्वीकार्यता किसी से छिपी नहीं है।

राजकुमार झा भी भाजपा के सक्रिय कार्यकर्ता हैं। वे शहीद भगत सिंह मंडल के अध्यक्ष भी रहे हैं। वे भाजपा के सक्रिय कार्यकर्ता हैं। इसके पूर्व राजकुमार झा बरौला मंडल के भी अध्यक्ष तथा बूथ संयोजक रहे हैं। पिछले 5 वर्षों से श्री झा जिलामंत्री की भी जिम्मेदारी निभा चुके हैं। पूर्वांचल समाज में उनकी भी काफी लोकप्रिया तथा सक्रियता है।

(हम भीड़ मे दौड़ना नहीं जीतना सिखाते हैं)
कोड 0910011910
सरस्वती ग्लोबल स्कूल
सेक्टर-22, नोएडा 8750611103
*फीस ना के बराबर *नि:शुल्क एडमिशन फीस
केवल 10 महीने की मासिक फीस

बच्चों का सहारा

निर्विवाद रूप से आम लोगों की धारणा सरकारी स्कूलों के प्रति अच्छी नहीं रहती। थोड़ी आर्थिक स्थिति सुधरते ही लोग अपने बच्चों को महंगे निजी स्कूलों में भेजने को आतुर हो जाते हैं। कोरोना संकट ने बताया था कि जब तमाम लोगों की आर्थिक स्थिति खराब हुई और नौकरियां गई, तो सरकारी स्कूलों ने उनके बच्चों को सहारा दिया। आंकड़े बताते हैं कि कोरोना संकट के दौरान व बाद में सरकारी स्कूलों में बच्चों के दाखिलों में खासी तेजी आई थी। लेकिन यह सवाल नीति-नियंताओं के लिये विचारणीय है कि बेहतर संरचनात्मक सुविधाओं व ऊंचे वेतनमान वाले शिक्षकों के बावजूद सरकारी स्कूल जनमानस की आकांक्षाओं की कसौटी पर खरे क्यों नहीं उतरते। समाज के संपन्न तबके व अधिकारियों के बच्चे सरकारी स्कूलों में जाने से गुरेज क्यों करते हैं? बहरहाल, एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट यानी असर 2024 के जो निष्कर्ष बीते मंगलवार को दिल्ली में जारी किए गए, वे नई उम्मीद जगाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों को लेकर किए गए अध्ययन वाली असर की रिपोर्ट बताती है कि देश में छह से चौदह वर्ष के बच्चों के पढ़ने की क्षमता और गणितीय कौशल में कोरोना संकट के बाद सुधार देखा गया है। सरकारी स्कूलों में तीसरी कक्षा के बच्चों के पढ़ने की बुनियादी क्षमता में पहले से सुधार हुआ है। जो पिछले दो दशकों में सर्वोत्तम स्तर पर है। अच्छी बात यह है कि सरकारी व निजी दोनों स्तर पर स्कूलों में विद्यार्थियों के बुनियादी गणितीय कौशल में सुधार देखा गया। जो पिछले एक दशक में बेहतर है। अब कक्षा तीन के छात्र घटाव के प्रश्न हल करने में सक्षम हैं। वहीं कक्षा पांच के बच्चे भाग के प्रश्न हल कर सकते हैं। अच्छी बात यह भी कि देशभर के स्कूलों में सीखने के स्तर में भी सुधार आया है। यह स्तर 2010 तक स्थिर था, फिर इसमें गिरावट का ट्रेंड देखा गया था। दरअसल,कोरोना काल में बच्चों के सीखने की क्षमता में गिरावट देखी गई। महामारी के चलते स्कूल बंद होने के बाद बच्चे पढ़ नहीं पाए। अधिकांश बच्चों के पास स्मार्टफोन नहीं थे। वहीं घर में माता पिता के कम पढ़े-लिखे होने या अनपढ़ होने से बच्चों का सीखने का मूलभूत कौशल प्रभावित हुआ था। बच्चे पहले का सीखा भूल गए और बड़ी संख्या में बच्चों को स्कूल भी छोड़ना पड़ा। असर की रिपोर्ट बताती है कि जहां नामांकन प्रतिशत में वृद्धि हुई है,वहीं डिजिटल साक्षरता की दर में भी वृद्धि देखी गई है। सुखद है कि कोरोना काल के बाद स्कूलों में पढ़ाई को लेकर गंभीरता देखी गई है। जागरूकता अभिभावकों के स्तर पर भी देखी गई है। हालांकि, बीते वर्ष के मुकाबले छह से चौदह वर्ष तक के बच्चों के दाखिलों में कमी देखी गई है। जिसकी वजह है कि कोरोना संकट के चलते रोजगार प्रभावित होने से जो बच्चे सरकारी स्कूलों की तरफ आए थे, वे फिर आय बढ़ने पर निजी स्कूलों की ओर रुख करने लगे हैं। दरअसल, सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर भरोसा कायम करने की जरूरत है। वैसे सरकारी स्कूलों में भी स्मार्टफोन इस्तेमाल करने वाले बच्चों की संख्या बढ़ी है। वहीं दूसरी असर की रिपोर्ट में पंजाब को लेकर कहा गया है कि स्कूली बच्चे पंजाबी पढ़ने को लेकर निराशाजनक प्रदर्शन कर रहे हैं। पंजाब सरकार के स्कूलों में कक्षा तीन के केवल 34 फीसदी छात्र ही दूसरी कक्षा की पाठ्य पुस्तकें पढ़ सकते हैं। हालांकि, पढ़ने की क्षमता और अंकगणित की समस्याओं के हल करने के मामले में सरकारी स्कूलों ने निजी स्कूलों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया । लेकिन चौंकाने वाली बात यह कि सरकारी व निजी स्कूलों के तीसरी कक्षा के 15 फीसदी से अधिक छात्र ही गुरुमुखी लिपि के अक्षर पढ़ सकते हैं, शब्द नहीं। वहीं 4.6 फीसदी छात्र पंजाबी के अक्षर भी नहीं पढ़ सकते। हालांकि, बुनियादी ढांचे के मोर्चे पर पंजाब राष्ट्रीय औसत से बेहतर स्थिति में रहा है। राष्ट्रीय स्तर से बेहतर 97.4 स्कूलों मे मध्याह्न भोजन परोसा गया। वहीं राष्ट्रीय औसत 11.1 के मुकाबले 32.7 फीसदी स्कूलों में छात्र कंप्यूटर का उपयोग करते हैं। लेकिन अभी सुधार की बहुत गुंजाइश है।

अब बनने लगा है गांधी के सपनों का भारत

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के निर्वाण दिवस जब हम नये भारत-सशक्त भारत को विकसित होते हुए देखते है तो प्रतीत होता है कि यह गांधी के ही सपनों का भारत बन रहा है। कांग्रेस की पूर्व सरकारों ने गांधी की केवल मूर्तियां स्थापित की, लेकिन भाजपा सरकार अपनी नीतियों में गांधी दर्शन को लागू कर रही है। गांधी के अहिंसा दर्शन को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी न केवल देश में बल्कि दुनिया में स्थापित कर रहे हैं। गांधी की अहिंसा ने भारत को गौरवान्वित किया है, भारत ही नहीं, दुनियाभर में अब उनकी जयन्ती को बड़े पैमाने पर अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। महात्मा गांधी महानायक के रूप में ही नहीं, देवनायक के रूप में लोकतंत्र के मजबूत आधार एवं संकटमोचक है। संसद से लेकर सड़क तक, कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और व्यक्ति से लेकर विचार बनने तक जीवन के हर नीति में, हर दृष्टिकोण में, हर मोड़ पर गांधी की व्याप्ति है। भारत का स्वतंत्रता संग्राम हो या फिर नये भारत की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियां हमारी हर सोच में, हर क्रियाएं में, हर नीति में गांधी का होना यह दर्शा रहा है कि आज गांधी पूर्व सरकारों की तुलना में ज्यादा जीवंत बने हैं। महात्मा गांधी के विचार एवं दर्शन पर ही मोदी सरकार की योजनाएं एवं नीतियां आगे बढ़ रही है। इस बात का खुलासा स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने करते हुए कहा है कि उनके सबका साथ, सबका विकास के विचार की प्रेरणा 1980 के दशक की है। मोदी ने अपने हाथ से लिखे एक नोट्स में इस विचार के बारे में काफी पहले ही लिख दिया था। मोदी द्वारा लिखे गए नोट्स से पता चलता है कि महात्मा गांधी के आदर्शों ने उनके जीवन पर गहरा प्रभाव छोड़ा है, जो केंद्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं में भी स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। जिसमें युवा मोदी ने महात्मा गांधी के विचारों उद्धरत करके लिखा था, मैं सबसे बड़ी संख्या की सबसे बड़ी भलाई के सिद्धांत में विश्वास नहीं करता। यह 51 प्रतिशत की अच्छाई के लिए 49 प्रतिशत की भलाई का त्याग करना है। यह सिद्धांत एक क्रूर सिद्धांत है। इसके माध्यम से मानवता को काफी नुकसान हुआ है। मानवता के लिए एक मात्र सिद्धांत है कि सभी के लिए भलाई के काम में विश्वास करना।' मोदी सरकार सभी की भलाई के लिये काम करते हुए गांधी दर्शन को ही आगे बढ़ा रही है।

मोदी का स्वच्छता मिशन गांधी की स्वच्छता सोच को ही आगे बढ़ाने का उपक्रम है। राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) भी गांधी के नाम पर चल रही योजना है। भारतीय मुद्रा से लेकर शासन-प्रशासन के हर कार्यस्थल पर गांधी है। हम गांधी के संवाद और सहिष्णुता के सिद्धान्तों को अपनाते हुए युद्ध, आतंकवाद और हिंसा को निस्तेज बना रहे हैं। दलित-आदिवासियों को न्याय और सम्मानपूर्ण जीवन प्रदत्त कर रहे हैं तो भारतीय

महात्मा गांधी के विचार एवं दर्शन पर ही मोदी सरकार की योजनाएं एवं नीतियां आगे बढ़ रही है। इस बात का खुलासा स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने करते हुए कहा है कि उनके सबका साथ, सबका विकास के विचार की प्रेरणा 1980 के दशक की है।

संस्कृति एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान में जुटे हैं। भारत माता, गौ माता और गंगा माता के सांस्कृतिक एवं धार्मिक चिन्तन को आगे बढ़ाते हुए गांधी की मूल अवधारणा को ही आगे बढ़ते हुए देख रहे हैं। आज गांव, गरीब और स्वराज में गांधी की ही सोच आगे बढ़ रही है कि आज भारत में लोकतंत्र की चाल, चेहरा और चरित्र बदला जा रहा है तथा आस्थाओं की राजनीति को बल देते हुए जाति-धर्म का उन्माद नियंत्रित किया जा रहा है। महात्मा गांधी, आंबेडकर और दीनदयाल उपाध्याय आज इसलिए भारत निर्माण की नई व्याख्याओं में सबसे आगे हैं। वसुधैव कुटुम्बकम एवं सर्वधर्म सद्भाव का विचार आज सर्वाधिक बलशाली बन कर दुनिया के लिये आदर्श बन गया है।

मानव ने ज्ञान-विज्ञान में आश्चर्यजनक प्रगति की है। परन्तु अपने और औरों के जीवन के प्रति सम्मान में कमी आई है। विचार-क्रान्तियां बहुत हुईं, किन्तु आचार-स्तर पर क्रान्तिकारी परिवर्तन कम हुए। शान्ति, अहिंसा और मानवाधिकारों की बातें संसार में बहुत हो रही हैं, किन्तु सम्यक्-आचरण का अभाव अखरता है। गांधीजी ने इन स्थितियों को गहराई से समझा और अहिंसा को अपने जीवन का मूल सूत्र बनाया। यदि अहिंसा, शांति और समता की व्यापक प्रतिष्ठा नहीं होगी तो भौतिक सुख-साधनों का विस्तार होने पर भी मानव शांति की नींद नहीं सो सकेगा। महात्मा गांधी के सच्चे उत्तराधिकारी के रूप में नरेन्द्र मोदी हमारे सामने हैं, उनके प्रभावी एवं चमत्कारी नेतृत्व में हम अब वास्तविक आजादी का स्वाद चखने लगे हैं, आतंकवाद, जातिवाद, क्षेत्रीयवाद, अलगाववाद की कालिमा धूल गयी है, धर्म, भाषा, वर्ग, वर्ण और दलीय स्वार्थो के राजनीतिक विवादों पर भी नियंत्रण हो रहा है। इन नवनिर्माण के पदचिन्हों को स्थापित करते हुए हम गांधी को जीवंत बनाये हुए है, यही कारण है कि कभी हम स्कूलों में शौचालय की बात सुनते है तो कभी गांधी जयन्ती के अवसर पर स्वयं झाड़ू लेकर स्वच्छता अभियान का शुभारंभ करते हुए मोदी को देखते हैं। मोदी कभी विदेश की धरती पर हिन्दी में भाषण देकर राष्ट्रभाषा को गौरवान्वित करते है तो कभी मेक इन इंडिया का शंखनाद कर देश को न केवल शक्तिशाली बल्कि आत्म-निर्भर बनाने की ओर अग्रसर करते हैं। नई खोजों, दक्षता, कौशल विकास, बौद्धिक संपदा की रक्षा, रक्षा क्षेत्र में स्वदेशी उत्पादन, श्रेष्ठ का निर्माण-ये और ऐसे अनेकों गांधी के सपनों को आकार देकर सचमुच लोकतंत्र एवं राष्ट्रीयता को सुदीर्घ काल के बाद सार्थक अर्थ दिये जा रहे हैं।

हम देशवासियों के लिये अपूर्व प्रसन्नता की बात है कि गांधी की प्रासंगिकता चमत्कारिक ढंग से बढ़ रही है। देश एवं दुनिया उन्हें नए सिरे से खोज रही है। उनको खोजने का अर्थ है अपनी समस्याओं के समाधान खोजना, युद्ध, हिंसा एवं आतंकवाद की बढ़ती समस्या का समाधान खोजना। शायद इसीलिये कई विश्वविद्यालयों में उनके विचारों को पढ़ाया जा रहा है, उन पर शोध हो रहे हैं। आज भी भारत के लोग गांधी के पदचिन्हों पर चलते हुए अहिंसा, शांति, सह-जीवन, स्वदेशी का समर्थन करते हैं। गांधीजी आज संसार के सबसे लोकप्रिय भारतीय बन गये हैं, जिन्हें कोई हैरत से देख रहा है तो कोई कौतुक से। इन स्थितियों के बावजूद उनका विरोध भी जारी है। उनके व्यक्तित्व के कई अनजान और अंधेरे पहलुओं को उजागर करते हुए उन्हें पतित साबित करने के भी लगातार प्रयास होते रहे हैं, लेकिन वे हर बार ज्यादा निखर कर सामने आए हैं, उनके सिद्धान्तों की चमक और भी बढ़ी है। वैसे यह लम्बे शोध का विषय है कि आज जब हिंसा और शस्त्र की ताकत बढ़ रही है, बड़ी शक्तियां हिंसा को तीक्ष्ण बनाने पर तुली हुई हैं, उस समय अहिंसा की ताकत को भी स्वीकारा जा रहा है। यह बात भी थोड़ी अजीब सी लगती है कि पूंजी केन्द्रित विकास के इस तूफान में एक ऐसा शख्स हमें क्यों महत्वपूर्ण लगता है जो आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की वकालत करता रहा, जो छोटी पूंजी या लघु उत्पादन प्रणाली की बात करता रहा। सवाल यह भी उठता है कि मनुष्यता के पतन की बड़ी-बड़ी दास्तानों के बीच आदमी के हृदय परिवर्तन के प्रति विश्वास का क्या मतलब है? जब हथियार ही व्यवस्थाओं के नियामक बन गये हों तब अहिंसा की आवाज कितना असर डाल पाएगी? एक वैकल्पिक व्यवस्था और जीवन की तलाश में सक्रिय लोगों को गांधीवाद से ज्यादा मदद मिल रही है।

आज जबकि समूची दुनिया में संघर्ष की स्थितियां बनी हुई हैं, हर कोई विकास की दौड़ में स्वयं को शामिल करने के लिये लड़ने की मुद्रा में है, कहीं सम्प्रदाय के नाम पर तो कहीं जातीयता के नाम पर, कहीं अधिकारों के नाम पर तो कहीं भाषा के नाम पर संघर्ष हो रहे हैं, ऐसे जटिल दौर में भी संघर्षरत लोगों के लिये गांधी का सत्याग्रह ही सबसे माकूल हथियार नजर आ रहा है। पर्यावरणवादी हों या अपने विस्थापन के विरुद्ध लड़ रहे लोग, सबको गांधीजी से ही रोशनी मिल रही है। गांधी की अहिंसा से सहयोग, सहकार, सहकारिता, समता और समन्वय जैसे उत्तम व उपयोगी मानवीय मूल्य जीवन्त हो रहे हैं। समस्त समस्याओं का समाधान भी एक ही है, वह है-अहिंसा। अहिंसा व्यक्ति में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की विराट भावना का संचार करती है। मनुष्य जाति युद्ध, हिंसा और आतंकवाद के भयंकर दुष्परिणाम भोग चुकी है, भोग रही है और किसी भी तरह के खतरे का भय हमेशा बना हुआ है। मनुष्य, मनुष्यता और दुनिया को बचाने के लिए गांधी से बढ़कर कोई उपाय-आश्रय नहीं हो सकता।

- ललित गर्ग
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार

रामचरित मानस

कल के अंक में आपने पढ़ा था कि त्रिपुरासुर का वध करने वाले शिवजी श्री रामचन्द्रजी को प्रणाम करके आनंद में भरकर अमृत के समान वाणी बोले- हे गिरिराजकुमारी पार्वती! तुम धन्य हो! धन्य हो!! तुम्हारे समान कोई उपकारी नहीं है॥ उससे आगे का वर्णन क्रमानुसार प्रस्तुत है।

पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा। सकल लोक जग पावनि गंगा॥
तुम्ह रघुबीर चरन अनुरागी। कीन्हिहु प्रस्न जगत हित लागी॥

जो तुमने श्री रघुनाथजी की कथा का प्रसंग पूछा है, जो कथा समस्त लोकों के लिए जगत को पवित्र करने वाली गंगाजी के समान है। तुमने जगत के कल्याण के लिए ही प्रश्न पूछे हैं। तुम श्री रघुनाथजी के चरणों में प्रेम रखने वाली हो॥

दो0-राम कृपा तें पारबति सपनेहुँ तव मन माहिं।
सोक मोह संदेह भ्रम मम बिचार कछु नाहिं॥

हे पार्वती! मेरे विचार में तो श्री रामजी की कृपा से तुम्हारे मन में स्वप्न में भी शोक, मोह, संदेह और भ्रम कुछ भी नहीं है॥

तदपि असंका कीन्हिहु सोई। कहत सुनत सब कर हित होई॥
जिन्ह हरिकथा सुनी नहिं काना। श्रवन रंध्र अहिभवन समाना॥

फिर भी तुमने इसीलिए वही (पुरानी) शंका की है कि इस प्रसंग के कहने-सुनने से सबका कल्याण होगा। जिन्होंने अपने कानों से भगवान की कथा नहीं सुनी, उनके कानों के छिद्र साँप के बिल के समान हैं॥

(क्रमशः...)

भारत की कूटनीति से पस्त हुआ कनाडा

बड़े बेआबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले, बहुत निकले मेरे अरमान मगर फिर भी कम निकले'। मिर्जा गालिब की यह पंक्ति कनाडा के वजीरे आजम 'जस्टिन ट्रूडो' पर सटीक बैठ रही है। वोट बैंक की सियासत में नाबिना होकर कनाडा की सत्ता पर काबिज रहने की हसरत में ट्रूडो अपनी गैर जिम्मेदाराना बयानबाजी से भारत की सरेआम मुखालफत कर बैठे। अपनी सियासी जमीन को मजबूत करने के लिए ट्रूडो ने कनाडा को भारत विरोधी चरमपंथ की दारुल हुकूमत बना डाला। कनाडा की खूफिया एजेंसियों तथा विदेशी ताकतों के इशारे पर बिना किसी पुख्ता सबूत के भारत पर कई बेतुके इल्जाम लगा दिए थे। कनाडा में शरण ले चुके आतंकियों की हलाकत के लिए भी भारत को ही जिम्मेदार ठहरा दिया। कनाडा की खूफिया एजेंसी 'कम्युनिकेशन सिक्योरिटी एस्टैब्लिशमेंट' ने अपने मुल्क को खतरा पैदा करने वाले ईरान, चीन, रूस व उत्तर कोरिया जैसे देशों की फेहरिस्त में भारत को भी शामिल कर लिया। लेकिन ट्रूडो को जब भारत की कूटनीतिक हैसियत का एहसास हुआ, तब तक देर हो चुकी थी। वैश्विक मंचों पर भारत की मुखालफत का नतीजा यह हुआ कि ट्रूडो को कनाडा के वजीरे आजम पद से इस्तीफा देना पड़ा। दरअसल जस्टिन ट्रूडो को भारत विरोधी हिकारत भरा नजरिया अपने वालिद व कनाडा के साबिक वजीरे आजम 'पियरे ट्रूडो' से विरासत में मिला है।

स्मरण रहे कि अपनी सियासी पकड़ मजबूत करके सत्ता हासिल करने के लिए मालदीव के सदर मोहम्मद मुइज्जु ने भी 'इंडिया आउट' का नारा देकर भारत विरोधी राग अलापा था, मगर मुइज्जु भली भांति जानते थे कि मालदीव के लोकतंत्र को महफूज रखने के लिए तथा वहां की अर्थव्यवस्था को गुलजार करने में हिंदोस्तान का खुसूसी किरदार है। हिंदोस्तान की सैन्य सलाहियत व आर्थिकी से भी मुइज्जु मुखातिब थे। मुइज्जु के भारत विरोधी बयानों के रद्देअमल में जब भारतीय पर्यटकों ने मालदीव का बायकॉट किया तो वहां के अर्थतंत्र का तवाजुन बिगड़ने लगा। नतीजतन मालदीव की सत्ता हासिल करने के बाद मुइज्जु के सुर व लहजा दोनों बदल गए। मालदीव का सदर बनने के बाद भारत विरोधी बयानों से यूटर्न लेकर मोहम्मद मुइज्जु हिंदोस्तान की शरण में आ गए ताकि भारत व मालदीव के रिश्ते बेहतर रहें तथा कर्ज के बोझ में डूब चुके मालदीव की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हो सके। सन् 2022 में श्रीलंका को आर्थिक संकट से निकालने में भारत ने अहम योगदान दिया था। सितंबर 2024 में श्रीलंका के राष्ट्रपति बनते ही वामपंथी 'अनुरा कुमारा दिसानायके' भी भारत की शरण में पहुंचे। श्रीलंका की मौजूदा प्रधानमंत्री 'हरिनी अमरसूर्या' ने दिल्ली विश्वविद्यालय से ही शिक्षा प्राप्त की है। अत: श्रीलंका के हुक्मरान भी भारत की अहमियत से मुखातिब हैं। अपने बारूद की ताकत से कायनात का तवाजुन बिगाड़ने की सलाहियत रखने वाले अमेरिका, फ्रांस, इजरायल व रूस जैसे ताकतवर मुल्क भी भारत की कूटनीति व सैन्य ताकत का लोहा मानते हैं। मगर पिछले नौ वर्षों से कनाडा की सत्ता पर काबिज रहने के बावजूद जस्टिन ट्रूडो भारत की विदेश नीति व कूटनीतिक ताकत को भांपने में नाकाम रहे। चार लाख से अधिक भारतीय छात्र कनाडा के शिक्षण संस्थानों में पढ़ाई करते हैं। दीगर मुल्कों की निस्बत भारतीय छात्रों का ये आंकड़ा बहुत अधिक है।

कनाडा के शिक्षण संस्थानों की अर्थव्यवस्था को गुलजार करने में भारतीय छात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है। कनाडा के शिक्षक वर्ग का रोजगार भी भारतीय छात्रों की महंगी फीस पर ही निर्भर करता है। कनाडा की मइशत को वहां के लाखों भारतीय प्रवासी लोग अपनी मेहनत से मजबूत कर रहे हैं। मगर विश्व की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था में शुमार भारत कनाडा की किसी भी चीज पर निर्भर नहीं है। हालात ये हैं कि कनाडा के तालीमी इरादों की तरफ भारतीय छात्रों का बढ़ता रुझान काफी हद तक कम हो रहा है। ट्रूडो की हुकूमत में कनाडा के हिंदू धर्मस्थलों पर भारत विरोधी स्लोगन लिखे गए। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगे' का अपमान किया गया। भारत की दिग्गज सियासी लीडर व साबिक वजीरे आजम इंदिरा गांधी के कत्ल का सरेआम जश्न मनाया गया। सनातन धर्म के जज्बातों को भड़काने तथा लोगों की धार्मिक आस्था को ठेस पहुंचाने की कारकर्दगी पर भी ट्रूडो के लब-ए-इजहार पर खामोशी थी। कनाडा की सरजमीं पर भारत विरोधी गतिविधियों को अभिव्यक्ति की आजादी करार दिया गया। हालांकि ट्रूडो के भारत विरोधी बयानों से कनाडा की आवाम भी खफा थी। अपने ही सियासी दल में विरोधी सुर उठने लगे थे। चरमपंथ व कट्टरवाद की हिमायत जस्टिन ट्रूडो के सियासी करियर पर कुठारघात साबित हुई। भारत विरोधी अलगाववादी ताकतों से ट्रूडो की रफाकत ने कनाडा की सियासी हरारत को इस हद तक बढ़ा दिया जिसका विकल्प ट्रूडो का इस्तीफा ही था। खुद को कनाडा की सियासत का चतुर खिलाड़ी समझने वाले जस्टिन ट्रूडो भारत की डिप्लोमेटिक स्ट्राइक के आगे अनाड़ी साबित हुए। लिहाजा विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत को अस्थिर करने का ख्वाब देखने वाली देशी व विदेशी ताकतों को भारत की कूटनीति से पस्त हुए कनाडा व मालदीव जैसे मुल्कों से सबक लेना होगा।

विश्व को अमन का पैगाम देने वाले बुद्ध, महावीर, नानक व महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों की कर्मभूमि रहा भारत एटमी कूवत से लैस मुल्क व विश्व की चौथी सैन्य ताकत तथा पांचवीं अर्थव्यवस्था की हैसियस रखता है। अलबत्ता भारत अपने राष्ट्रीय हितों व स्वाभिमान से कभी समझौता नहीं करेगा। बहरहाल जस्टिन ट्रूडो के दौरे हुकूमत में कनाडा के गुलिस्तां में चरमपंथ के जो जहरीले शजर उगे हैं, उनमें अमन के गुल नहीं खिलेंगे। अतः भारत को 'शठे शाठ्यम समाचरेत' नीति से ही जवाब देना होगा, ताकि हिंदोस्तान का राष्ट्रवादी संकल्प व इकबाल हमेशा बुलंद रहे। भारत विरोधी विचारधारा कनाडा की सियासत में गहरी पैठ बना चुकी है। दोनों मुल्कों के बिगड़े ताल्लुकात एक मुद्दत तक खुशहाल नहीं हो सकते।

-प्रताप सिंह पटियाल
स्वतंत्र लेखक

राशिफल

माघ शुक्ल पक्ष तृतीया | **(विक्रम संवत् 2081)**

मेष- (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)
व्यापारिक स्थिति सुदृढ़ होगी। कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगी। स्वास्थ्य मध्यम।

वृष- (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे , वो)
स्वास्थ्य नरम-गरम है। प्रेम, संतान का भरपूर सहयोग मिलेगा। व्यापार भी बहुत अच्छा रहेगा।

मिथुन- (का, की, कु, घ, ड , छ, के, हो, हा)
चोट-चपेट लग सकती है। किसी परेशानी में पड़ सकते हैं। परिस्थितियां प्रतिकूल हैं। स्वास्थ्य मध्यम।

कर्क- (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डा)
नौकरी-चाकरी की स्थिति बहुत अच्छी है। स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा है। बाकी प्रेम,संतान थोड़ा मध्यम है।

सिंह- (मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टु, टे)
शत्रुओं पर हावी रहेंगे। गुण ज्ञान की प्राप्ति होगी। बुजुर्गों का आर्शीवाद रहेगा। स्वास्थ्य मध्यम।

कन्या- (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)
भावुक मन से लिया गया निर्णय नुकसान करेगा। महत्वपूर्ण निर्णय अभी रोक के रखें। स्वास्थ्य ठीक-ठाक।

तुला- (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, त)
भूमि, भवन, वाहन की खरीदारी के प्रबल योग बनेंगे। स्वास्थ्य ठीक है। प्रेम, संतान का साथ है।

वृश्चिक- (तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू)
पराक्रम रंग लाएगा। रोजी-रोजगार में तरक्की करेंगे। स्वास्थ्य मध्यम। प्रेम, संतान मध्यम। व्यापार बहुत अच्छा।

धनु- (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)
भाग्यवान बने रहेंगे। स्वास्थ्य थोड़ा मध्यम है। प्रेम, संतान भी मध्यम है, लेकिन व्यापार अच्छा है।

मकर- (भो,जा,जी,जू,जे,जो,खा,खी,खू,खे,गा,गी)
सितारों की तरह चमकेंगे। जिस चीज की जरुरत है उसकी उपलब्धता होगी। सरकारी तंत्र से पंगेबाजी मत करिएगा।

कुम्भ- (गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, षो, द)
खर्च की अधिकता मन को परेशान करेगी। स्वास्थ्य थोड़ा मध्यम रहेगा। प्रेम, संतान अच्छा है।

मीन- (दी, दु, झ, ध, दे, दो, च, चा, चि)
रुका हुआ धन वापस मिलेगा। आय के नवीन स्तोत्र बनेंगे। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।

फर्जी रिपोर्ट देता है सेक्टर-52 का अनाया डायग्नॉस्टिक सेंटर

अदालत के आदेश पर सेक्टर-24 थाने में एफआईआर दर्ज

नोएडा (चेतना मंच)। सेक्टर-52 स्थित बी-57 अनाया अल्ट्रासाउंड सेंटर के डॉक्टरो पर फर्जी रिपोर्ट करने के गम्भीर आरोप लगे हैं। अपर मुख्य न्यायिक

मजिस्ट्रेट गौतम बुद्धनगर ने प्रकरण की गंभीरता से लेते हुए एफआईआर दर्ज करने का आदेश सेक्टर-24 थाने को दिया। और सप्ताह भर के अंदर कार्रवाई की रिपोर्ट को कोर्ट में पेश किए जाने का आदेश भी दिया।

यह मामला नोएडा के सेक्टर-52 स्थित अनाया डायग्नोसिस सेंटर का है जहां डॉ शिवानी ने विगत 13 अप्रैल 23 को अर्चना मिश्रा का अल्ट्रासाउंड किया था फर्जी रिपोर्ट के मुताबिक मरीज के गुर्दे में 17.5 एमएम पथरी होने की रिपोर्ट दी। परिजनों को संदेह हुआ तो उन्होंने नोएडा सेक्टर-61 अल्ट्रासाउंड डायमेंशन 14 अप्रैल 23 को डाक्टर मोनिका के अल्ट्रासाउंड सेंटर पर जाकर दोबारा से अल्ट्रासाउंड कराया। तो पता चला की पथरी जैसी कोई बात नहीं है।

विश्वास और अविश्वास के बीच झूलता यह परिवार एक बार फिर से 21 अप्रैल 23 को नोएडा सेक्टर-11 स्थित मेट्रो हॉस्पिटल में फिर से अल्ट्रासाउंड कराया। इस बार भी पथरी जैसी कोई रिपोर्ट नहीं आई। अब सवाल उठता है कि अनाया अल्ट्रासाउंड सेंटर जिसने 17.5 एमएम पथरी क्यू रिपोर्ट किया?

दरअसल अल्ट्रासाउंड डायग्नोसिस सेंटर संगठित अपराध की तरह व्यवहार कर रहे हैं। मरीजों को इस तरह से रिपोर्ट करके उन्हें ऑपरेशन के लिए विवश करते हैं। इसका क्या मतलब निकाला जाए इस रिपोर्ट को आधार बनाकर मरीज के परिजन निर्णय ले लेते अनावश्यक रूप से लाखों रुपए का व्यय होता। अनन्या डायग्नोसिस की गलत रिपोर्ट पर नोएडा के मुख्य चिकित्सा अधिकारी से की गई शिकायत पर सिर्फ लीपापोती करते हुए इतिश्री कर दिया। लेकिन चिकित्सा अधिकारी के अनुसार भी कोई पथरी नहीं पायी गई।

पीड़िता अर्चना मिश्रा ने न्यायालय में बाद दायर किया। अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए परीक्षणों प्रान्त डायग्नोसिस सेंटर पर मुकदमा दर्ज किए जाने का आदेश संबंधित थाने को दिया है। अनाया डायग्नोसिस सेंटर की डा. शालिनी सिंह का पक्ष जानने के लिए दोबारा फोन किया गया। लेकिन उनके स्टाफ ने बात करवा दूंगा कहकर फोन काट दिया।

- उ0प्र0 भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड में -

श्रमिकों के कम पंजीकरण पर बिफरे जिलाधिकारी

नोएडा (चेतना मंच)। कैंप कार्यालय सेक्टर-27 नोएडा के सभागार में जिला श्रम बन्धु की बैठक संपन्न हुई, जिसमें सहायक निदेशक कारखाना, श्रम विभाग के श्रम प्रवर्तन अधिकारीगण एवं अन्य विभाग के अधिकारियों तथा डा0 के0पी0 ओझा, रामसागर, रामनरेश यादव एवं अमर सिंह एवं सेवायोजक प्रतिनिधि राकेश कोहली, एल0बी0 सिंह, सुनील राय, उमेश बत्रा आदि द्वारा प्रतिभाग गया।

अपर श्रमायुक्त सरजू राम द्वारा जिला श्रम बन्धु की विगत बैठक की कार्यवाही की अनुपालन आख्या से जिलाधिकारी को अवगत कराया गया। जिलाधिकारी द्वारा बैठक की अध्यक्षता करते हुए उ0प्र0 भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड के अन्तर्गत जनपद में श्रमिक पंजीयन / नवीनीकरण की प्रगति कम होने के कारण नाराजगी प्रकट की गयी एवं समस्त श्रम प्रवर्तन अधिकारियों को निर्माण स्थलों एवं लेबर अड्डों पर कैंप लगाकर श्रमिक पंजीयन / नवीनीकरण की प्रगति को बढ़ाने के निर्देश दिये, साथ ही यह निर्देश दिए कि जनपद में प्रत्येक निर्माणाधीन ईकाइयों पर कार्यरत एवं नियोजित श्रमिकों का शत-

प्रतिशत पंजीयन / नवीनीकरण कराया जाना सुनिश्चित किया जाये व जनपद में निर्माणधीन ईकाइयों की जाँच/निरीक्षण की कार्यवाही भी की जाये। आयोजित बैठक में उपस्थित सेवायोजक एवं श्रमिक प्रतिनिधियों द्वारा श्रम कार्यालय में स्टाफ की कमी से अवगत कराया गया। श्रमिक प्रतिनिधियों द्वारा श्रम कार्यालय द्वारा जारी विभिन्न श्रम अधिनियमों के अन्तर्गत वसूली प्रमाण पत्रों पर वसूली की कार्यवाही न होने का प्रकरण उठाया, जिस पर जिलाधिकारी द्वारा संबंधित अधिकारियों को निर्देश देते हुए जारी वसूली प्रमाणों में तीव्र गति से वसूली की कार्यावाही करने के साथ ही अमीनों, तहसीलदारों एवं श्रम कार्यालय के अधिकारियों के साथ बैठक करने के निर्देश दिये।

जिलाधिकारी द्वारा बैठक में उपस्थित सेवायोजक प्रतिनिधियों से श्रम कानूनों का पालन करने एवं श्रमिकों के देय पावनों को ऑनलाईन भुगतान करने को कहा, जिस पर सेवायोजक प्रतिनिधियों ने बताया गया कि श्रम कानूनों के पालन के साथ श्रमिकों के देव पावनों का भुगतान किया जाता है।

जिलाधिकारी द्वारा बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों को निर्देशित किया गया कि वे आपसी सौहार्दपूर्ण वातावरण में कार्य करें, जिससे श्रमिकों एवं उद्यमियों के मध्य विवाद की स्थिति उत्पन्न न हो।

यूके और स्पेन की यूनिवर्सिटी के साथ एमिटी का समझौता

नोएडा (चेतना मंच)। अकादमिक सहयोग की साझेदारी बढ़ाने के लिए यूके के क्वीन मैरी विश्वविद्यालय ऑफ लंदन और स्पेन के वेलेडोलिड विश्वविद्यालय के प्रतिनिधमंडल ने एमिटी

एमिटी विवि. में खोला जाएगा स्पेनिश सेंटर

विश्वविद्यालय का दौरा किया गया। इस अवसर पर एमिटी विश्वविद्यालय में वलाडोलिड विश्वविद्यालय द्वारा स्पेनिश केंद्र के उद्घाटन की भी घोषणा भी की गई।

इस अवसर पर एमिटी विश्वविद्यालय और यूके के क्वीन मैरी विश्वविद्यालय ऑफ लंदन और स्पेन के वेलेडोलिड विश्वविद्यालय के मध्य आपसी अकादमिक सहयोग विकसित करने के लिए समझौता पत्र हस्ताक्षर किया गया। इस समझौता पत्र एमिटी के एफपीओ के स्ट्रैटजिक ऑपरेशन के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर श्री अमोल चौहान की उपस्थिती में यूके के क्वीन मैरी विश्वविद्यालय ऑफ लंदन के अध्यक्ष एंव प्रधानाचार्या प्रो कोलीन बेली, स्पेन के वेलेडोलिड विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रो एंटोनियो लार्गो और एमिटी ग्रुप वाइस चांसलर डा गुरिंदर सिंह ने हस्ताक्षर किये।

यूके के क्वीन मैरी विश्वविद्यालय ऑफ लंदन के अध्यक्ष एंव प्रधानाचार्या प्रो कोलीन बेली ने कहा कि हम आज एमिटी विश्वविद्यालय का दौरा करके और हमारे बीच पारस्परिक रूप से लाभकारी सहयोग की यात्रा शुरू करके बेहद खुश हैं। हम अपने छात्रों की सामाजिक गतिशीलता के बारे में भावुक हैं और हमारा उद्देश्य दुनिया भर में प्रतिभाओं को खोजना है। हेल्थकेयर, एआई, बिग डेटा, ऊर्जा और स्थिरता में अनुसंधान हमारे कुछ प्रमुख फोकस क्षेत्र हैं और हम इन क्षेत्रों में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए उद्योग भागीदारों के साथ काम करते हैं। स्पेन के वेलेडोलिड विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रो एंटोनियो लार्गो ने कहा कि हमें एमिटी विश्वविद्यालय के साथ साझेदारी करके खुशी हो रही है, और हमारा मुख्य ध्यान हमारे छात्रों पर है। एमिटी ग्रुप वाइस चांसलर डा गुरिंदर सिंह ने कहा कि आज एक ऐतिहासिक दिन है जब एमिटी विश्वविद्यालय ने दुनिया के दो प्रतिष्ठित संस्थानों, क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन यूके और यूनिवर्सिटी ऑफ वलाडोलिड, स्पेन के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

वाहन ट्रांसफर न कराने पर कंसेप्ट महेन्द्रा शो रूम के खिलाफ मुकदमा दर्ज

नोएडा (चेतना मंच)। 5 वर्षों तक बेची गई स्कॉर्पियो विक्रेता के नाम ट्रांसफर न कराने पर सेक्टर-2 स्थित कंसेप्ट महेन्द्रा शोरूम समेत दो लोगों के खिलाफ फेज-1 थाने में मुकदमा दर्ज कराया गया है।

जिला मेरठ के पांडेय नगर निवासी ओमपाल सिंह ने न्यायालय में दिए प्रार्थना पत्र में बताया कि उनके पास एक स्कार्पियो गाड़ी थी। जिसे उन्होंने जिला बदायूं निवासी अतुल कुमार से ढाई लाख रुपये में खरीदा था। इसके बाद गाड़ी को नोएडा के सेक्टर-दो स्थित महिंद्रा के शोरूम को एक्सचेंज बोनस में तीन लाख 65 हजार रुपये में 14 मई 2019 को दे दिया था। गाड़ी का नाम ट्रांसफर कराने के लिए सभी औपचारिकताएं पूरी करके दिए थे। शिकायतकर्ता ने एक नई गाड़ी स्कार्पियो ली थी। इसके बाद कंपनी द्वारा शिकायतकर्ता की पुरानी गाड़ी को जिला कानपुर देहात निवासी

पीड़ित के एसएमएसपर आ चुके हैं 15 हजार रूपये के कई चालान

मुकेश कुमार को बेच दी थी। जिसकी एनओसी आरटीओ मेरठ द्वारा 11 जुलाई 2019 को दी जा चुकी है। आरोप है कि अभी तक शिकायतकर्ता से खरीदी गई स्कार्पियो गाड़ी को मुकेश कुमार और महिंद्रा कांसेप्ट के अधिकारियों द्वारा ट्रांसफर नहीं कराया गया है।

पीड़ित का कहना है कि इस संबंध में उन्होंने विभिन्न विभागों और थाना सेक्टर-20 पुलिस को लिखित और रजिस्टर्ड डाक द्वारा शिकायत दी, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। पीडति का कहना है कि गाड़ी का नाम न बदलने के चलते वर्ष 2019 से लेकर अब तक विभिन्न स्थान पर चालान हो रहे हैं, जिसकी सूचना उन्हें एसएमएस के द्वारा प्राप्त हो रही है। अब तक गाड़ी के 15 हजार रुपये से अधिक के चालान हो चुके हैं। पीड़ित को आशंका है कि उस गाड़ी से को आपराधिक घटना न घट जाए। यदि ऐसा हुआ तो कानूनी कार्रवाई पीड़ित के खिलाफ हो सकती है। थाना स्तर से सुनवाई न होने पर कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। थाना प्रभारी निरीक्षक का कहना है कि कोर्ट के आदेश पर मुकेश कुमार और महिंद्रा कांसेप्ट शोरूम के निदेशक के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

पृष्ठ एक के शेष....

मोदी सरकार का....

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि यह बजट विकास की रफ्तार बढ़ाने, समग्र विकास करने, निजी क्षेत्र में निवेश को बढ़ाने, घरेलू संवेदनाओं को मजबूत करने और मध्यम वर्ग की खर्च करने की क्षमता को बढ़ाने की कोशिशों का हिस्सा है। बजट 2025-26 विकास की रफ्तार बढ़ाने, समग्र विकास, निजी क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देने के लिए, घरेलू संवेदनाओं को मजबूत करने के लिए, मध्यम वर्ग की खर्च करने की क्षमता को बढ़ाने के बिंदुओं पर आधारित है।

बजट में प्रस्तावित विकास उपाय, गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी को ध्यान में रखते हुए 10 क्षेत्रों को कवर किया गया है। इनमें कृषि विकास और उत्पादकता को गति देना, ग्रामीण संपन्नता और अनुकूलन निर्माण, समावेशी प्रगति के पथ पर सबको साथ लेकर चलने, भारत में विनिर्माण बढ़ाने और मेक इन इंडिया को आगे ले जाने, एमएसएमई को मदद देने, रोजगार और विकास को समर्थ बनाने, जनता-अर्थव्यवस्था और नवाचार में निवेश करने, ऊर्जा आपूर्तियां सुनिश्चित करने, निर्यात को बढ़ावा देने और नवाचार को पोषित कर- कृषि योजनाओं से 1.7 करोड़ किसानों को मोदी सरकार का ....

- कॉटन प्रोडक्टिविटी के लिए पांच साल का मिशन
- बिहार के किसानों के लिए खास ऐलान. दलहन-तिलहन में आत्मनिर्भरता का टारगेट.
- मखाना किसानों के लिए बजट में ऐलान. मखाना बोर्ड बनेगा.
- वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि पीएम धन-धान्य कृषि योजना चलाएंगे. 10 जिलों में योजना चलाई जाएगी. कम उपज वाले इलाकों में शुरू होगी योजना.
- खाद्य तेल में आत्मनिर्भरता के लिए छह साल के मिशन का ऐलान.
- फल सब्जियों के लिए व्यापक प्रोग्राम का ऐलान.

फुटवियर और लेदर के क्षेत्रों के लिए फोकस प्रोडक्ट स्कीम

फुटवियर और लेदर के क्षेत्रों के लिए फोकस प्रोडक्ट स्कीम शुरू की जाएगी। भारत के फुटवियर और लेदर क्षेत्र की उत्पादकता, गुणवत्ता और प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के लिए नॉन लेदर क्वालिटी के फुटवियर के उत्पादन की मशीनरी, डिजाइन क्षमता, मैन्यूफैक्चरिंग में इस्तेमाल होने वाली चीजों को समर्थन प्रदान किया जाएगा। लेदर फुटवियर और लेदर उत्पादों को भी समर्थन दिया जाएगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की शिक्षा के लिए उत्कृष्ट संस्थान की संस्थापना की जाएगी। मेडिकल कॉलेजों में 10 हजार अतिरिक्त सीटें बढ़ाई जाएंगी। सभी जिला अस्पतालों में डे केयर केंसर सेंटर बनाए जाएंगे। 2025-26 में ऐसे 200 सेंटर बनाए जाएंगे।

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म वर्कर्स के लिए भी योजना

सरकार उनके परिचय पत्र बनाने में मदद करेगी और उन्हें ई-श्रम कार्ड मुहैया कराएगी। इससे 1 करोड़ Gig वर्कर्स को फायदा मिलेगा।

अटल टिंकरिंग लैब से नवाचार को बढ़ावा देने के लिए 50 हजार लैब स्थापित की जाएंगी

सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0 के तहत आठ करोड़ बच्चों, एक करोड़ गर्भवती महिलाओं और किशोरवय की 20 लाख बच्चियों को इससे फायदा मिलेगा।

अटल टिंकरिंग लैब

सरकारी स्कूलों में नवाचार को बढ़ाने के लिए ऐसी 50 हजार लैब स्थापित की जाएंगी। भारतीय भाषा पुस्तक योजना शुरू की जाएगी ताकि भारतीय भाषाओं में शिक्षण को बढ़ावा दिया जा सके।

स्किलिंग के लिए राष्ट्रीय उत्कृष्ट संस्थान

ऐसे पांच संस्थानों की स्थापना होगी। यह मेक फॉर इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड के उद्देश्य के तहत होगा।

IITs में क्षमता विकास, आईआईटी पटना को फायदा

पिछले 10 वर्ष में आईआईटी में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या 65 हजार से बढ़कर 1.3 लाख होगी। 6500 और छात्रों को प्रवेश देने और उनके छात्रावास बनाने के लिए मदद दी जाएगी। ढुढ्ढ पटना में बुनियादी ढांचे को विस्तार दिया जाएगा।

बिहार में राष्ट्रीय फूड टेक्नोलॉजी संस्थान बनेगा

फुटवियर और चमड़ा उद्योगों को बढ़ावा दिया जाएगा। इससे 22 लाख लोगों को रोजगार मिलने की उम्मीद है। भारत को खिलौनों का ग्लोबल हब बनाने के लिए योजना पर अमल किया जाएगा।

राष्ट्रीय विनिर्माण मिशन की शुरुआत की जाएगी। इसमें क्लीन टेक विनिर्माण पर जोर दिया जाएगा।

बिहार में नया संस्थान

बिहार में राष्ट्रीय फूड टेक्नोलॉजी संस्थान शुरू किया जाएगा। इससे पूरे पूर्वी क्षेत्र में खाद्य प्रसंस्करण क्षमताएं मजबूत करने में मदद मिलेगी।

एमएसएमई सेक्टर में क्रेडिट कवर बढ़ाया जाएगा

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों की संख्या एक करोड़ है और इनसे 5.7 करोड़ लोग जुड़े हैं। यह भारत को दुनिया में मैन्यूफैक्चरिंग हब बनाने की दिशा में मददगार है। ये स्र्स्थ 45 फीसदी निर्यात में हिस्सेदारी रखते हैं। स्र्स्थ के लिए क्रेडिट गारंटी कवर को बढ़ाया जाएगा। स्र्स्थ वर्गीकरण के लिए निवेश की सीमा 2.5 गुना बढ़ाई जाएगी। वर्गीकरण के लए टर्नओवर सीमा दो गुना की जाएगी

कस्टमाइज्ड क्रेडिट

सूक्ष्म उद्यमों के लिए कस्टमाइज्ड क्रेडिट जारी होंगे, जिनकी सीमा पांच लाख रुपये होगी। पहले वर्ष ऐसे 10 लाख कार्ड जारी किए जाएंगे।

टर्म लोन

पहली बार उद्यमी बनने वालों को दो करोड़ रुपये का टर्म लोन दिया जाएगा। इसके दायरे में पांच लाख महिलाएं और अनुसूचित जाति-जनजाति वर्ग के दायरे में आएंगे।

सब्जी, फल और पोषण

सब्जियों और फलों के लिए सरकार आय के स्तर को बढ़ाने के साथ, सब्जियों, फलों और श्रीअन्न का उत्पादन को बढ़ावा दे रही है। इसके लिए किसान उत्पादक संगठनों और सहकारी समितियों की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। साथ ही राज्य सरकारों के साथ मिलकर योजनाएं बनाई जाएंगी।

बिहार में मखाना बोर्ड

बिहार के लोगों के लिए यह विशेष अवसर है ताकि वे मखाना का उत्पादन और उसके प्रसंस्करण को बढ़ावा दे सकें। मखाना बोर्ड इसमें किसानों की मदद करेगा। इससे किसानों को पथ प्रदर्शन और प्रशिक्षण उपलब्ध कराएगा। कपास उगाने वाले किसानों के लिए कपास मिशन की शुरुआत हो रही है। इससे कपास की अधिक लंबे रेशे वाली किस्मों को बढ़ावा मिलेगा। इससे किसानों की आमदनी बढ़ाने में मदद मिलेगी।

किसान क्रेडिट कार्ड के जरिए 7.7 करोड़ किसानों को अल्पकालिक लोन की सुविधा मिलती है। यूरिया उत्पादन में आत्मनिर्भरता के लिए असम में यूरिया संयंत्र में उत्पादन शुरू किया गया है। इसमें 12.78 लाख मीट्रिक टन की क्षमता वाला संयंत्र स्थापित किया जाएगा। राष्ट्रीय उच्च पैदावार बीज मिशन का क्रियान्वयन किया जाएगा।

धमाकों से दहला.....

पुलिस ने बताया कि एलपीजी गैस गोदाम से 360 सिलेंडरों को लेकर ट्रक रामपुर उत्तर प्रदेश जा रहा था जैसे ही ट्रक भोपुरा पेट्रोल पंप के पास पहुंचा पीआरबी के जवानों ने देखा की आग लग रही है उन्होंने ड्राइवर को ट्रक खाली स्थान पर खड़ा करवाने के लिए कहा और ड्राइवर खाली जगह पर ट्रक खड़ा कर भाग गया देखते ही देखते सिलेंडर में तेज धमाके होने शुरू हो गए । पास की कॉलोनी विक्रम एनक्लेव डीएलएफ कॉलोनी पप्पू कॉलोनी डिफेंस कॉलोनी और भोपुरा गांव के कुछ हिस्सों में सिलेंडर के टुकड़े गिरे। गनीमत यह रही किया रात का समय था जिसके कारण कोई कैजुअल्टी नहीं हुई। यदि यही घटना दिन में होती तो बड़ा हादसा हो सकता था।

मौके पर एसीपी लोनी थाना प्रभारी शालीमार गार्डन बृजेश कुमार थाना टीला मोड़ प्रभारी करतार सिंह पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे।

चीफ फायर अधिकारी राहुल पाल ने बताया की 20 गाड़ियों ने आग पर काबू पाया यह गाडियां साहिबाबाद वैशाली लोनी और कोतवाली गाजियाबाद से बुलाई गई थी किसी तरह की कोई कैजुअल्टी नहीं हुई है।

मोबाइल टॉवरों के ....

बदमाश संगठित गिरोह बनाकर रेकी करने के बाद मोबाइल टावरों से उपकरण चोरी कर रहे थे।

जानकारी के मुताबिक थाना बिसरख पुलिस द्वारा इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस व लोकल इंटेलिजेंस के माध्यम से सूचना के आधार पर एस.के.एस तिराहे पर चेकिंग की जा रही थी, तभी एक काले रंग की क्रेटा कार सामने से आती हुई दिखाई दी जिसे पुलिस टीम द्वारा रूकने का इशारा किया गया तो कार स्पीड बढ़ाकर तेजी से चिपियाना मार्ग की तरफ भागने लगी जिस पर पुलिस टीम द्वारा पीछा करते हुए कार को रोकने का प्रयास किया गया लेकिन कार चालक के द्वारा गाड़ी को नहीं रोकी गई। पुलिस टीम द्वारा कार को घेरकर रोकने का प्रयास किया गया तो कार सवार बदमाश खुद को घिरता देखकर कार से कूदकर भागने लगे। पुलिस टीम द्वारा बदमाशो का पीछा किया गया जिसपर बदमाशो द्वारा पुलिस टीम पर जान से मारने की नियत से फायर किया गया। पुलिस टीम द्वारा की गयी जवाबी कार्रवाई में दोनो बदमाश गोली लगने से घायल हो गये। घायल बदमाशो की पहचान अतुल पुत्र सुधीर कुमार निवासी गाजियाबाद व बादल पुत्र अशोक निवासी गाजियाबाद के रूप में हुयी है। बदमाशो के कब्जे से दो अवैध तमंचा मय 2 जिन्दा कारतूस व 2 खोखा कारतूस बरामद हुए है। बरामद कार की तलाशी ली गयी तो कार की डिग्गी में 04 आर0आर0यू0 बरामद हुई जिनकी कीमत लगभग 15 लाख रूपये है। पूछताछ करने पर बदमाशो द्वारा बताया गया कि यह बरामद यूनिट विभिन्न टावरों से चोरी की गयी है।

पूर्वोत्तर रेलवे

खुली ई-निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर/टी.आर.एस./ पूर्वोत्तर रेलवे, लोको शेड गोण्डा द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु "खुली" ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। **क्र.सं.-1, निविदा सूचना संख्याः** LS-GD-2024-Modify-CBC-R, **कार्य का नामः** "आरडीएसओ संशोधन के अनुसार सीबीसी कपलर ऑपरेटिंग हैंडल को बॉटम से टॉप ओपेराटेड का संशोधन," **अनुमानित लागत (₹में):** ₹7,90,825.86, **निविदा की अवधिः** 24 माह, **अग्रिम धनराशि :** ₹ 15,800.00, **क्र.सं.-2, निविदा सूचना संख्याः** LS-GD-2025-Repair-Cab_AC, **कार्य का नामः** "छोटे और बड़े शेड्यूल के दौरान गोंडा एवं गोरखपुर शेड के लोको की छत पर लगे कैब एसी की मरम्मत और रखरखाव 02 वर्षों के लिए," **अनुमानित लागत (₹में):** ₹56,63,966.14, **निविदा की अवधिः** 24 माह, **अग्रिम धनराशिः** ₹ 1,13,300.00, **क्र.सं.-3, निविदा सूचना संख्याः** LS-GD-2024-Modify-MPCS, **कार्य का नामः** "मौजूदा सर्किट को परिवर्तित और संशोधित करके और इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव में एमपीसीएस के लिए उपयुक्त नयी वायरिंग प्रदान करके रिले प्रकार के लोकोमोटिव को एमपीसीएस फिटेड लोकोमोटिव में परिवर्तित करना।," **अनुमानित लागत (₹में):** ₹16,28,955.49, **निविदा की अवधिः** 24 माह, **अग्रिम धनराशि :** ₹ 32,600.00, **नोटः** • ऑफर अपलोड करने की अंतिम तिथि एवं समय 21.02.2025, 15.00 बजे, • इस ई-निविदा से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी, न्यूनतम अर्हताएं तथा नियम एवं शर्तें, रेलवे की वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है। • निविदाकार, ई-निविदा प्रपत्र को अपलोड करने से पूर्व इस ई-निविदा से संबंधित शुद्धि पत्र (यदि कोई हो) को वेबसाईट पर संज्ञान में लेना सुनिश्चित करें।

मुजाधि/विद्युत-231 — समंविइं/टीआरएस लोको शेड, गोण्डा

"ट्रेनों में ज्वलनशील पदार्थ लेकर यात्रा न करें"

दैनिक चेतना मंच

भगवान हनुमान बजरंग बली के अवतार श्री बालाजी (मेंहदीपुर) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार-पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में समर्पित है।

डाक पंजी. सं. L-10/GBD-574/99

RNI No. 69950/98

स्वामी मुद्रक प्रकाशक रामपाल सिंह रघुवंशी ने बीएफएल इन्फोटेक लि. सी-9, सेक्टर-3, नोएडा, गौतमबुद्धनगर (यू पी.) से छपवाकर, ए-131 सेक्टर-83, नोएडा से प्रकाशित किया।

संपादक-रामपाल सिंह रघुवंशी

Contact: 0120-2518100, 4576372, 2518200

Mo.: 9811735566, 8750322340

E-mail: chetnamanch.pr@gmail.com raghuvanshirampal365@gmail.com raghuvanshi_rampal@yahoo.co.in

www.chetnamanch.com

पीएम मत्स्य संपदा योजना के लिए आज से ऑनलाइन आवेदन

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना का लाभ जन सामान्य को पहुंचाने के लिए वेबसाइट पर आज से आवेदन किया जा सकेगा।

सहायक निदेशक मत्स्य गौतमबुद्धनगर ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में मत्स्य विभाग के अन्तर्गत प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना की विभिन्न मात्स्यिकी परियोजनाओं के लाभ से जनसामान्य को देने के लिए आनलाइन आवेदन प्राप्त करने के लिए विभागीय पोर्टल https:/fisheries.up.gov.in 1 फरवरी 2025 से खोला जा रहा है। आवेदन करने की अन्तिम तिथि 15 फरवरी होगी।

उन्होंने बताया कि योजनान्तर्गत परियोजनाओं का विवरण, इकाई लागत, आवेदन करने की प्रकिया, आवेदन के साथ संलग्न किये जाने वाले अभिलेख व विस्तृत विवरण एवं विज्ञापन विभागीय पोर्टल https:/fisheries.up.gov.in पर देखा जा सकता है। उन्होंने यह भी बताया कि योजना के संबंध में विस्तृत जानकारी कार्यालय सहायक निदेशक मत्स्य, कं0नं0-305, 306 विकास भवन, सूरजपुर द्वितीय तल जनपद गौतमबुद्धनगर में किसी भी कार्य दिवस में प्राप्त कर सकते है।

रेलयात्री कृपया ध्यान दें!

कुम्भ मेला विशेष रेलगाड़ी

महाकुम्भ-2025 के दौरान रेलयात्रियों के सुविधाजनक आवागमन हेतु उत्तर रेलवे द्वारा पूर्व घोषित विशेष रेलगाड़ियों के साथ-साथ निम्नलिखित विशेष रेलगाड़ी का संचालन भी निम्न विवरण के अनुसार किया जाएगा :-

रेलगाड़ी सं. 04494/04493 आनंद विहार ट.-पटना जं.-आनंद विहार ट. कुम्भ मेला विशेष रेलगाड़ी — 02 फेरे

रेलगाड़ी सं. 04494		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 04493	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
----	23:55	आनंद विहार ट.	14:00	----
00:43	00:45	गाजियाबाद	13:15	13:17
02:00	02:02	अलीगढ़ जं.	10:43	10:45
03:05	03:10	टूण्डला जं.	08:50	08:55
06:40	06:45	गोविन्दपुरी	05:15	05:20
10:30	10:35	प्रयागराज जं.	02:10	02:15
14:40	14:50	प. दीन दयाल उपाध्याय जं.	23:25	23:35
16:05	16:07	बक्सर	22:08	22:10
17:00	17:02	आरा जं.	21:08	21:10
17:30	17:32	दानापुर	20:40	20:42
18:15	----	पटना जं.	----	20:00

चलने के दिन : 04494 आनंद विहार जं. से दिनांक 06.02.2025 (वीरवार) को एवं 04493 पटना जं. से दिनांक 07.02.2025 (शुक्रवार) को।

स्थान: प्रथम वाता., 2 टियर वातानुकूलित एवं 3 टियर वातानुकूलित

रेलयात्रियो से अनुरोध है किसी भी जानकारी के लिए रेलमदद हेल्पलाइन नं. 139 पर सम्पर्क करें अथवा रेलवे की वेबसाइट https://enquiry.indianrail.gov.in अथवा NTES ऐप देखें

पर हमें फॉलो करें

उत्तर रेलवे — आपकी सुविधा-हमारा ध्येय

हमें www.nr.indianrailways.gov.in पर मिलें

361/2025

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

महिला नक्सली सहित 7 इनामी नक्सलियों ने किया आत्मसमर्पण

एजेंसी

कांकेर। छत्तीसगढ़ के उत्तर बस्तर के कांकेर जिले में शुक्रवार को नक्सली गतिविधि में सक्रिय 32 लाख रुपये के 7 इनामी नक्सलियों ने आत्मसमर्पण कर दिया। सभी नक्सली उत्तर बस्तर के रावघाट, परतापुर एरिया कमेटी और गढ़चिरौली डिवीजन में सक्रिय थे। ये नक्सली अब तक कई वारदातों मुठभेड़, आगजनी और आईईडी विस्फोट में शामिल रह चुके हैं। कांकेर डीआईजी ने बताया कि आत्मसमर्पित सात इनामी नक्सलियों में सीनियर डीवीसीएम महिला नक्सली ममता भी शामिल है, जो कई बड़ी नक्सल घटनाओं में शामिल रह चुकी है। साल 2025 में जनवरी महीने में अभी तक कांकेर में 18 नक्सली ने आत्मसमर्पण कर चुके हैं। आत्म

समर्पण करने वाले इन सातों नक्सलियों में ममता उर्फ शांता, दिनेश मट्टामी, आयतु राम पोटाई, इतवारीन पद्दा, संजय नरेटी, सगनु राम आंचला और जमुना नेताम उर्फ नीरा शामिल हैं। इन्होंने डीआईजी अमित तुकाराम काम्बले, डीआईजी विपुल मोहन बाला (बीएसएफ सेक्टर कन्हारगांव, भानुप्रतापपुर), वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक आईके एलेसेला, भानुप्रतापपुर के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संदीप पटेल, कांकेर के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दिनेश सिन्हा और अन्य पुलिस अधिकारी के समक्ष आज आत्म समर्पण कर दिया है। आत्मसमर्पित करने वाले नक्सलियों में डीवीसीएम कैडर के ममता सहित 3 नक्सलियों पर 8-8 लाख रुपये का इनाम घोषित किया गया था। एक नक्सली पर 5 लाख रुपये और 3 अन्य पर 1-1 लाख रुपये का इनाम था। आत्मसमर्पण के बाद पुनर्वास नीति के तहत उन्हें प्रोत्साहन राशि के रूप में 25-25 हजार रुपये प्रदान किए गए हैं।

पुलिस के अनुसार कांकेर जिले में चलाये जा रहे नक्सल उन्मूलन अभियान के तहत छत्तीसगढ़ नक्सलवाद उन्मूलन एवं पुनर्वास नीति और सुकमा पुलिस के चलाये जा रहे नियद नेल्ला नार और अति संवेदनशील अंदरूनी क्षेत्रों में लगातार कैम्प स्थापित होने से पुलिस के बढ़ते दबाव के फलस्वरूप नक्सली लगातार आत्मसमर्पण कर रहे हैं। आज आत्मसमर्पित करने वाली नक्सली 60 वर्षीय ममता उर्फ शांता तेलंगाना की निवासी है। यह वर्ष 2011 में ग्राम सुलंगी पुलिस-नक्सली मुठभेड़ शामिल थी, जिसमें बीएसएफ के 2 जवान बलिदान हुए और 2 नक्सली मारे गए थे। वर्ष 2015 में ग्राम मेटाबोदेली (चारगांव) में माईंस और आगजनी की वारदात, ग्राम गुदुंल में पंचायत चुनाव के दौरान आईईडी विस्फोट, जिसमें पुलिस के 2 जवान बलिदान में भी वह शामिल रही है। वर्ष 2018 में ग्राम महला कैम्प पर हमला, वर्ष 2019 में ग्राम कागबरस और चिलपरस में वाहनों में आगजनी की वारदात में शामिल थी। आत्मसमर्पित 20 वर्षीय नक्सली दिनेश मट्टामी नारायणपुर निवासी है। वह वर्ष 2024 में ग्राम हिदूर में सड़क निर्माण में लगे वाहनों में आगजनी की वारदात में शामिल रहा है जबकि 27 वर्षीय नक्सली आयतु राम पोटाई निवासी कांकेर, वर्ष 2020 में ग्राम महला मंदिर टेकरी में पुलिस-नक्सली मुठभेड़ और वर्ष 2023 में ग्राम आलदण्ड और बिनागुण्डा के बीच जंगल में पुलिस-नक्सली मुठभेड़ में शामिल रहा है। 25 वर्षीय नक्सली इतवारीन पद्दा कांकेर का निवासी है। वह वर्ष 2018 में महला कैम्प पर हमला शामिल था। इसमें बीएसएफ के 2 जवान घायल हुए थे। वर्ष 2020 में ग्राम पतकालबेड़ा में मुठभेड़ की वारदात जिसमें 03 नक्सली मारे गए थे, में शामिल था। 23 वर्षीय नक्सली संजय नरेटी कांकेर का निवासी है। वह वर्ष 2023 में ग्राम आलपरस में गाड़ियों में आगजनी, वर्ष 2023 में ग्राम गोमें में पुलिस-नक्सली मुठभेड़ में शामिल रहा है। इसके अतिरिक्त वह वर्ष 2024 में ग्राम काकनार में पुलिस-नक्सली मुठभेड़ में शामिल रहा है, जिसमें रावघाट एसी सदस्य राजू उर्फ सुनील कलमू मारा गया और कमांडर जग्गू गोटा घायल हो गया था।

खास खबर

ब्रिटिश पॉप स्टार मैरिएन का निधन

लंदन। ब्रिटिश पॉप स्टार मैरिएन फेथफुल दुनिया का अलविदा कह गईं। उन्होंने 78 साल की उम्र में अंतिम सांस ली। वे अपने अनोखे संगीत और आवाज के लिए जानी जाती थीं। उनके निधन की पुष्टि उनकी म्यूजिक प्रमोशन कंपनी रिपब्लिक मीडिया ने की। उनकी मौत से उनके परिवार और फैंस के बिच शोक छा गया है। मैरिएन फेथफुल के कंपनी के प्रवक्ता ने कहा कि एक्ट्रेस मैरिएन फेथफुल का गुरुवार को निधन हो गया है। उन्होंने लंदन में अपने परिवार के बीच अंतिम सांस ली। उनकी कमी हमेशा महसूस होगी। मैरिएन फेथफुल का एल्बम ब्रोकन इंग्लिश बहुत मशहूर हुआ था। उन्होंने अपने करियर में कई यादगार गाने गाए और संगीत जगत में खास पहचान बनाई। मिक जैगर के साथ रिलेशन में रहने के कारण मैरिएन फेथफुल काफी सुर्खियों में रही थीं। उन्हें लाइफ में नशे की लत, स्ट्रगल भरी लाइफ और पर्सनल लाइफ में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इसके वाबजूद उन्होंने कभी भी अपने टैलेंट को नहीं छोड़ा। साल 1979 में उनका एल्बम ब्रोकन इंग्लिश आज भी उनकी सबसे फेमस वर्क में गिना जाता है।

अनियंत्रित कार खाई में गिरी, पिता-पुत्र की मौत

टिहरी। उत्तराखंड के टिहरी जिले में एक कार के खाई में गिरने से उसमें सवार पिता-पुत्र की मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस और राज्य आपदा प्रतिवादन बल की टीमें मौके पर पहुंचीं और दोनों शवों को खाई से बाहर निकालकर शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। जानकारी के मुताबिक देहरादून जिले के मालदेवता से रायपुर-कुमाल्डा-कद्दूखाल मार्ग होकर चंबा आ रही कार बीती रात सकलाना में आनंद चौक के समीप अनियंत्रित होकर 200 मीटर गहरी खाई में जा गिरी। दुर्घटना के बारे में सूचना वहां से गुजर रहे एक वाहन चालक ने दी जिसे सड़क किनारे लगी रेलिंग को टूटा देखकर संदेह हुआ था। चालक ने वाहन रोककर नीचे देखा तो वहां एक कार नीचे गिरी दिखाई दी। चंबा के थाना प्रभारी ने बताया कि मृतकों की शिनाख्त मूसा सिंह (57) और उसके पुत्र मनवीर सिंह (27) के रूप में हुई जो चंबा के जडधार गांव के रहने वाले थे। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

बाल आश्रय गृह से भागी चार लड़कियां

बारामूला। उत्तरी कश्मीर के बारामूला में स्थित बाल आश्रय गृह से चार नाबालिग रोहिंग्या लड़कियां लापता हो गई हैं। पुलिस की जांच और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर बताया है कि लड़कियां आश्रय गृह से भागी हैं। सबसे ज्यादा गंभीर बात यह है कि लापता होने वाली इन चारों लड़कियों को पुलिस ने छह माह पहले ही मानव तस्करी गिरोह के चंगुल से छुड़ाया था। यह घटना न केवल बाल संरक्षण की प्रभावशीलता को सवाल में डालती है, बल्कि मानव तस्करी के खिलाफ की गई कोशिशों की दिशा में भी चेतावनी देती है। लापता लड़कियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बारामूला पुलिस ने जांच शुरू की है, जिसमें उन्होंने सीसीटीवी फुटेज की जांच करने और आसपास के इलाकों के कैमरों से भी जानकारी इकट्ठा की जा रही है।

घुसपैठ की कोशिश नाकाम, सेना ने दो आतंकी किया ढेर

एजेंसी

पुंछ । भारतीय सेना ने जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर घुसपैठ की कोशिश को नाकाम कर दो आतंकवादियों को ढेर कर दिया है। नगरोटा स्थित व्हाइट नाइट कॉर्प्स ने बताया कि गुरुवार रात एलओसी पर आतंकवादी गतिविधियों के बारे में जानकारी मिली। सतर्क सैनिकों ने घुसपैठ की कोशिश कर रहे आतंकवादियों को घेर लिया। इसके बाद सेना के साथ हुई मुठभेड़ में दो आतंकवादी मारे गए। सेना ने बाद में इलाके में तलाशी अभियान चलाकर हथियार व युद्ध सामग्री बरामद की। सेना ने कहा कि ऑपरेशन अभी जारी है। सेना ने कहा, बीती रात पुंछ सेक्टर में लाइन ऑफ कंट्रोल पर आतंकवादी

गतिविधि का खुलासा हुआ। सतर्क सैनिकों ने तत्परता दिखाकर घुसपैठ करने वाले आतंकवादियों को घेर लिया। इसके बाद जबरदस्त गोलाबारी हुई। ऑपरेशन पूरे दिन चलता रहा। लोगों ने इलाके में कुछ संदिग्ध लोगों को देखने की सूचना दी थी, जिसके बाद सुरक्षा बलों ने जम्मू संभाग के डोडा जिले में बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान चलाया। डोडा ऑपरेशन से पहले, सुरक्षा बलों ने आतंकवादियों के ओवर-ग्राउंड वर्करों का पता लगाने और उन्हें पकड़ने के लिए राजौरी जिले के 25 स्थानों पर तलाशी ली। ओजीडब्ल्यू आतंकवादियों के लिए आंख और कान का काम करते हैं। वे उन्हें रसद सहायता प्रदान करते हैं, हथियार पहुंचाते हैं और सुरक्षा बलों की गतिविधियों पर नजर रखते हैं। खुफिया एजेंसियों ने बताया कि ओजीडब्ल्यू आतंकवादियों के लिए उन इलाकों में आतंक फैलाने के लिए आसान और निहत्थे ठिकानों की पहचान करते हैं।

खदान में भूस्खलन से कई मजदूरों की मौत

कोलीकोरो। माली स्थित एक सोने की खदान में हुए भूस्खलन की चपेट में आने से कई मजदूरों के मारे जाने की आशंका है। मीडिया रिपोर्ट में पश्चिम अफ्रीकी देश के कोलीकोरो क्षेत्र के गवर्नर कार्यालय ने यह जानकारी दी। इन खदान कर्मियों में ज्यादातर महिलाएं थीं। मीडिया रिपोर्ट में बताया गया है कि कोलीकोरो के गवर्नर ने कहा कि सोना निकालने के लिए की जा रही खुदाई में बड़ी संख्या में महिलाएं मौजूद थीं। खुदाई स्थल के चारों ओर एक बांध था जो टूट गया और पानी कीचड़ के साथ अंदर घुस आया, जिसने काम कर रहीं महिलाओं को अपनी चपेट में ले लिया। बताया जा रहा है कि दक्षिणी माली स्थित सोने की खदान में बुधवार को भूस्खलन हुआ और इसमें कई मजदूर मारे गए, लेकिन संख्या नहीं बताई है।

मुंबई एयरपोर्ट से तीन बांग्लादेशी नागरिक गिरफ्तार, दो नामों से बनवाया था पासपोर्ट

एजेंसी

मुंबई। देश में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी नागरिकों के खिलाफ कार्रवाई जारी है। वहीं शुक्रवार को मुंबई एयरपोर्ट पर तीन बांग्लादेशी नागरिकों को हिरासत में लिया गया है। एयरपोर्ट अधिकारियों ने बांग्लादेशी नागरिक महिला शाबिकुन, नाहर और अबु अहमद को हिरासत में लिया है। कथित तौर पर शाबुकल ने दो नामों से भारतीय पासपोर्ट बनाया था। इस पासपोर्ट से वह सऊदी अरब और बांग्लादेश की यात्रा कर चुकी हैं।

वहीं, वसोर्वा पुलिस ने बांग्लादेशी नागरिक मोनेर बख्तियार शेख और बख्तियार दोसुर शेख को गिरफ्तार किया है। ये दोनों रिश्ते में पिता पुत्र हैं। 29 जनवरी को मुंबई की घाटकोपर पुलिस ने शहर में अवैध रूप से रह रहे 12 बांग्लादेशी नागरिकों को हिरासत में लिया था। घाटकोपर पुलिस के मुताबिक उनके दस्तावेजों की जांच करने पर पता चला कि वह लंबे समय से मुंबई में रह रहे थे। उनके पास जाली दस्तावेज भी मिले। खुफिया जानकारी के आधार पर छापा मारा था जिसमें 12 बांग्लादेशी नागरिकों को हिरासत में लिया गया था, इनमें कई नाबालिग भी थे। 26 जनवरी को भी महाराष्ट्र के पालघर जिले के नालासोपारा पूर्व स्थित गांगडीपाड़ा और धानिवबाग क्षेत्र में पेल्हार पुलिस ने 9 बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया था। इनमें 7 महिलाएं और 2 पुरुष शामिल थे। गिरफ्तार इन लोगों के पास भारतीय नागरिकता से संबंधित कोई दस्तावेज नहीं मिला है।

फिर लौटेगी ठंड, पहाड़ी और मैदानी क्षेत्रों में हो सकती है वर्षा-बर्फबारी

एजेंसी

देहरादून। देहरादून और अन्य क्षेत्रों में मौसम शुष्क है और पारा भी सामान्य से ज्यादा है। दिन गर्म होने लगे हैं और धूप में भी तपिश बढ़ने लगी है। सुबह-शाम हल्की ठिठुरन है। अगले कुछ दिन प्रदेश में मौसम शुष्क रहने के आसार हैं, लेकिन 3 फरवरी से मौसम फिर करवट ले सकता है। मौसम विभाग के मुताबिक पहाड़ों में बर्फबारी और मैदानी क्षेत्रों में वर्षा हो सकती है। गुरुवार सुबह दून समेत आसपास के इलाकों में धूप खिली रही। दिनभर तेज धूप से मौसम में गर्माहट महसूस की गई।

दून का तापमान भी सामान्य से चार

डिग्री सेल्सियस ज्यादा था। इसके अलावा न्यूनतम तापमान भी सामान्य से ज्यादा रहा। हालांकि मैदानी क्षेत्रों में हल्की धुंध और पर्वतीय क्षेत्रों में पाला परेशानी बढ़ा रहा है। पहाड़ों में भी दिन में ठंड कम होने लगी है। प्रदेशभर में ही अभी से पारा चढ़ गया है। अगले सप्ताह वर्षा-बर्फबारी के आसार बन रहे हैं। जिससे पारे में गिरावट आ सकती है।

शिक्षिका से दुष्कर्म आरोपी गिरफ्तार

मुंबई। ठाणे में एक शैक्षणिक संस्थान के संस्थापक को एक शिक्षिका से दुष्कर्म करने के आरोप में गिरफ्तार किया है। पुलिस थाने के वरिष्ठ निरीक्षक ने बताया कि आरोपी रमेशचंद्र शोभनाथ मिश्रा (54) को गुरुवार रात हिरासत में लिया गया है। अपनी शिकायत में 42 साल की शिक्षिका ने आरोप लगाया कि शोभनाथ मिश्रा ने उसे नौकरी दिलाने के लिए उससे 6 लाख रुपए लिए थे और 2015 से ही उसका यौन शोषण कर रहा था। शिक्षिका ने बताया कि मिश्रा ने उसे स्थायी नौकरी देने का वादा भी किया था। पीड़िता ने हिम्मत जुटाकर पुलिस से संपर्क तब किया जब हाल ही में मिश्रा समेत चार लोगों के खिलाफ अन्य शिक्षिकाओं की शिकायत पर यौन उत्पीड़न का मामला दर्ज कराया गया।

मण्डलायुक्त की अध्यक्षता में मण्डलीय उद्योग बन्धु की बैठक सम्पन्न

एजेंसी

मीरजापुर। मण्डलायुक्त विन्ध्याचल मण्डल बालकृष्ण त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयुक्त कार्यालय सभागार में मण्डलीय उद्योग बन्धु की बैठक आहूत की गई। बैठक में सर्व प्रथम उपस्थित सभी अधिकारीयों एवं उद्यमीयों से बारी-बारी परिचय प्राप्त किया। बैठक में प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड के मण्डलीय अधिकारी के बैठक में अनुपस्थित पाये जाने पर मण्डलायुक्त द्वारा कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए स्पष्टीकरण जारी करने हेतु निर्देश दिया। वीएस रोड लोहरा वीयर निर्माण को जोड़ने वाले मार्ग का चैड़ीकरण/नवीनीकरण करने हेतु मण्डलायुक्त

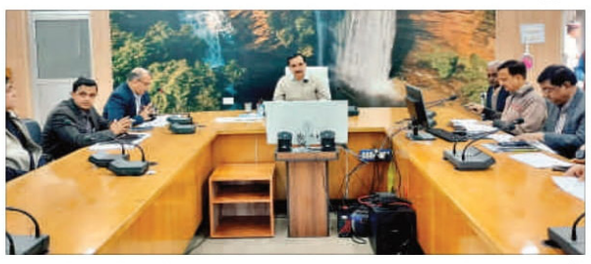

द्वारा अधिशासी अभियन्ता लोनिवि सोनभद्र को प्रस्ताव तैयार कर शासन को प्रेषित करने के निर्देश दिया। महायोजना 2031 पर चर्चा के दौरान हनुमान पड़रा मे औद्योगिक क्षेत्र विकसित करने हेतु एक बैठक कर टीम गठित कर ली जाय तदोपरान्त सर्वे किया जाय। उद्यमीयों द्वारा मांग किया गया कि शहर में जाम की समस्या रहती है जिससे उद्योग प्रभावित हो रहा है जिस पर मण्डलायुक्त द्वारा पुलिस अधीक्षक को निर्देशित किया कि दिन में 03 बजे से 5 बजे तक दो घण्टे के लिए शास्त्री सेतु को खोला जाय। मण्डलायुक्त ने निवेश मित्र पोर्टल पर प्राप्त आवेदन पत्रो को निर्धारित समय सीमा के अन्तर्गत निस्तारित करने का निर्देश दिया। निवेश मित्र पोर्टल पर आवास विभाग के दो आवेदन लम्बित होने पर मण्डलायुक्त द्वारा निर्देशित किया गया कि तीन दिवस के अन्दर निस्तारण कराते हुए आख्या उपलब्ध कराएं। मुख्यमंत्री युवा विकास अभियान के तहत संयुक्त आयुक्त उद्योग द्वारा मण्डलायुक्त को अवगत कराया गया कि लगभग 50 आवेदनों को बैंको के द्वारा निरस्त कर दिया गया है जिस पर उन्होंने कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए प्रबन्धक लीड बैंक मीरजापुर को निर्देशित करते हुए कहा कि सभी पुनः बैंकवार सत्यापन करते हुए अवगत कराएं। बैठक में संयुक्त आयुक्त उद्योग विरेन्द्र कुमार, प्रभागीय वनाधिकारी अरविन्द राज मिश्र व उद्यमी उपस्थित रहें।

मुख्य विकास अधिकारी ने की जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक

एजेंसी

मीरजापुर । मुख्य विकास अधिकारी विशाल कुमार ने कलेक्ट्रेट सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक कर स्वास्थ्य विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के प्रगति के बारे में समीक्षा की। मुख्य विकास अधिकारी ने प्रभारी चिकित्साधिकारी पटेहरा की प्रगति खराब होने पर शो-काज नोटिस जारी करने का निर्देश मुख्य चिकित्साधिकारी को दिया। उन्होने कहा कि सभी प्रभारी चिकित्साधिकारियों को निर्देशित करते हुये कहा कि लक्ष्य के सापेक्ष जो भी डाटा अपलोड नही करेगा इसके विरूद्ध कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाये। जननी सुरक्षा योजना की समीक्षा के दौरान गुरूसण्डी व विजयपुर में भुगतान लम्बित होने पर निर्देशित किया गया लम्बित भुगतान यथाशीघ्र निस्तारण कराया जाय। बैठक में मातृ मृत्यु आडिट की समीक्षा के दौरान मुख्य विकास अधिकारी ने सभी एमओआईसी मृत्यु के कारण को गम्भीरता से लेते हुये इसको रोकने हेतु समुचित कार्यवाही करें।

बैठक में आरसीएच स्टेटस, परिवार कल्याण के अन्तर्गत असफल नसबन्दी की क्षतिपूर्ति, लाभार्थियों के विवरण, एसएमसीयू, महिला चिकित्सालय, एनआरसी मण्डलीय चिकित्सालय, एनबीएसयू आदि के बेड की स्थिति, दवाओं की उपलब्धतता की समीक्षा की गयी। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अन्तर्गत मुख्य विकास अधिकारी ने निर्देशित करते हुये कहा कि प्रायः देखा जा रहा है स्कूलों में छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य परीक्षण के लिये चिकित्सकों की टीम नही जा रही है मुख्य चिकित्साधिकारी आरबीएसके टीम नियमानुसार स्कूलों में भेजते हुये बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण कराये। बैठक में राष्ट्रीय अन्धतता एवं दृष्टिहीनता नियंत्रण कार्यक्रम, राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम, वेक्टर जनित रोग, क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम, इमरजेंसी मेडिकल ट्रांसपोट सर्विस एम्बुलेंस 108, 102 सहित प्रत्येक बिन्दुओं पर समीक्षा कर प्रगति लाने का निर्देश दिया। क्षय रोग उन्मूलन में मुख्य विकास अधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि अभियान चलाते हुए अधिक से अधिक ग्राम पंचायतों को क्षय रोग मुक्त ग्राम पंचायत बनाया जाए। बैठक में आयुर्वेद एवं यूनानी की समीक्षा के दौरान मुख्य विकास अधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि शासकीय भवनों में संचालित यूनानी अस्पतालों में बाउंड्रीवाल क्षतिग्रस्त है तो उनका स्टीमेट बनाकर खण्ड विकास अधिकारी उपलब्ध कराया जाए। बैठक में मुख्य चिकित्साधिकारी डासीएल वर्मा, सभी प्रभारी चिकित्साधिकारी, सभी खण्ड विकास अधिकारी व अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहें।

ममता कुलकर्णी ने सिर मुंडाने से किया इनकार

एजेंसी

प्रयागराज। महाकुंभ में अभी हाल ही में अभिनेत्री ममता कुलकर्णी को किन्नर अखाड़े का महामंडलेश्वर बनाया गया था। इसको लेकर भारी विरोध हुआ। कई अखाड़ों के साथ बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री ने इसका विरोध जताया था। अब महाकुंभ से खबर आ रही है कि किन्नर अखाड़े के संस्थापक ऋषि अजय दास ने ममता कुलकर्णी को महामंडलेश्वर पद से हटा दिया है।

बताया जा रहा है कि ममता के सिर न मुंडाने पर यह एक्शन लिया गया है। अजय दास ने खुद को किन्नर अखाड़े का संस्थापक बताया है। अजय दास ने कहा कि नए सिरे से अखाड़े का पुनर्गठन किया जाएगा। उन्होंने महामंडलेश्वर लक्ष्मीनारायण

त्रिपाठी को भी किन्नर अखाड़े से निष्कासित कर दिया है, क्योंकि उन्होंने देशद्रोह की आरोपी ममता कुलकर्णी को अखाड़े में शामिल किया था और उनकी जानकारी के बिना ममता को महामंडलेश्वर बना दिया था। उधर, लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी खुद को संस्थापक बता रहीं हैं। उन्होंने कहा कि अजय को 2017 में अखाड़े से निकाल दिया था। अभिनेत्री ममता कुलकर्णी को महामंडलेश्वर बनाए जाने के बाद से विवाद बढ़ा है। बता दें कि अभिनेत्री ममता कुलकर्णी कुछ दिन पहले महामंडलेश्वर बनी। महाकुंभ में संगम स्नान और पिंड दान के बाद किन्नर अखाड़े की आचार्य डॉक्टर लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी ने ममता का पट्टाभिषेक करते हुए उन्हें नया नाम भी दिया। आचार्य लक्ष्मीनारायण ने इस दौरान कहा था कि ममता हम लोगों से करीब डेढ़ साल से संपर्क में थीं। इससे पहले भी वह जूना अखाड़े में महामंडलेश्वर के साथ थीं। उनके गुरु के ब्रह्मलीन होने के बाद उन्हें दिशा नहीं मिल रही थी। इस पर उन्होंने इच्छा जाहिर की कि वह सनातन से पूर्ण रूप से जुड़ना चाहती हैं।

अब जमीन के 200 फीट नीचे बसेंगे अत्याधुनिक और सुरक्षित शहर

- इन बंकरों पर परमाणु हमले, इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगों और अन्य खतरे होंगे बेअसर

एजेंसी

वॉशिंगटन। दुनिया में कई बड़ी-बड़ी और ऊंची-ऊंची इमारतें बन चुकी हैं जो आसमान को छू रही हैं वहीं अब लोग जमीन के नीचे भी आलीशान और सुरक्षित घर बनाने की सोच रहे हैं। अमेरिका की एक कंपनी ने 200 फीट नीचे एक अत्याधुनिक और सुरक्षित शहर बनाने की योजना तैयार की है, जो खासतौर पर अमीरों और मशहूर हस्तियों के लिए डिजाइन किया

है। एक रिपोर्ट के मुताबिक इस प्रोजेक्ट में करीब 300 मिलियन डॉलर की लागत आएगी और इसे 2026 में खोला जाएगा। इन बंकरों को व्हाइट हाउस जैसी सुरक्षा और अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस किया जाएगा। यह परियोजना वर्जीनिया स्थित स्ट्रैटेजिकली आर्मर्ड एंड फोटीफाइड एनवायरनमेंट्स कंपनी द्वारा बनाई जा रही है। कंपनी के फाउंडर अल कॉर्बी ने कहा कि इन बंकरों में रहने वालों को गोपनीयता, सुरक्षा और आराम की बेहतरीन सुविधाएं मुहैया कराई जाएंगी। इन बंकरों में एआई से संचालित मेडिकल सुविधाएं, स्वादिष्ट भोजन, इनडोर स्विमिंग पूल, कोल्ड प्लंज सेंटर, बॉलिंग एली और क्लाइंबिंग वॉल जैसी लग्जरी सुविधाएं होंगी। इसके अलावा हर बंकर में एक सेंसिटिव कम्पार्टमेंटेड इंफॉर्मेशन फैसिलिटी होगी, जो गोपनीयता और सुरक्षा का उच्चतम स्तर तय करेंगी। परमाणु हमले, इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगों और अन्य खतरों से बचाव के लिए इन बंकरों को बैलिस्टिक ग्लास और मल्टी-लेयर बायोमेट्रिक सिक्योरिटी सिस्टम से सुरक्षित किया जाएगा।

वर्जीनिया में बनने वाला पहला बंकर 625 अमीर लोगों के रहने के लिए बनेगा और इसमें हाई-टेक लिफ्टें भी होंगी, जो कुछ ही मिनटों में लोगों को बाहरी दुनिया से जोड़ सकेंगी। इस प्रोजेक्ट की शुरूआत अमेरिका के बड़े शहरों से की जाएगी और इसे भविष्य में दुनिया के एक हजार शहरों में विस्तारित किया जाएगा। यह हाई-टेक बंकर सिस्टम दुनियाभर में उत्सुकता का कारण बन गया है, खासकर उन लोगों के बीच जो खुद को भविष्य के खतरों से सुरक्षित रखना चाहते हैं।

सुनीता विलियम्स ने अंतरिक्ष ने बनाया स्पेस वॉक का नया रिकॉर्ड

एजेंसी

न्यूयॉर्क। अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर ने गुरुवार को अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में 5.5 घंटे तक अंतरिक्ष वॉक किया। ऐसा करके दोनों ने एक नया रिकॉर्ड बनाया है। इसकी घोषणा नासा की तरफ से की गई है। दोनों ने अपने प्राथमिक उद्देश्यों को सफलतापूर्वक पूरा किया, जिसमें स्टेशन के ट्रस से एक रेडियो फ्रीक्वेंसी समूह एंटीना असेंबली को हटाना और डेस्टिनी प्रयोगशाला और क्वेस्ट एयरलॉक से सतह सामग्री के नमूने एकत्र करना शामिल था। नासा ने बुधवार को बताया कि वह स्पेसएक्स के साथ मिलकर सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर को अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन से सुरक्षित रूप से पृथ्वी पर वापस लाने

के लिए काम कर रहा है। ये दोनों अंतरिक्ष यात्री महीनों से फंसे हुए हैं। विलमोर और विलियम्स जून 2024 में बोइंग के स्टारलाइनर से पहुंचे थे। इनका मिशन केवल आठ दिनों का था, लेकिन यान में तकनीकी समस्याओं के कारण नासा ने योजनाओं में बदलाव किया। बता दें कि सुनीता विलियम्स का यह नौवां और बुच विलमोर का पांचवां अंतरिक्ष वॉक था। इस मिशन के दौरान सुनीता विलियम्स ने कुल 62 घंटे और 6 मिनट का अंतरिक्ष वॉक समय पूरा किया।

खास खबर

जोमैटो की 15 मिनट में फूड डिलीवरी सर्विस कई शहरों में शुरू

नई दिल्ली। फूड डिलीवरी कंपनी जोमैटो की 15 मिनट में फूड डिलीवरी सर्विस क्विक अब कई शहरों में लाइव हो गई है। जोमैटो ऐप के होम स्क्रीन पर उपलब्ध क्विक 10 मिनट डिलीवरी से ग्राहक फास्ट फूड और पहले से पके हुए इंस्टेंट मील्स जैसे स्नैक्स, डेसर्ट, बेवरेज आदि 15 मिनट के भीतर मंगा सकते हैं। यह सेवा ग्राहकों के स्थान से लगभग 2 किलोमीटर के दायरे में स्थित रेस्टोरेंट्स और क्लाउड किचन से उपलब्ध है। यह सर्विस फिलहाल दिल्ली एनसीआर, मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद, इंदौर, चेन्नई, पुणे, लखनऊ, अहमदाबाद आदि के चुनिंदा स्थानों पर ग्राहकों के लिए उपलब्ध है। फाइनेंशियल एक्सप्रेस के क्विक लॉन्च पर पूछे गए सवाल के जवाब में कंपनी ने कहा कि हमारी हाल ही में शुरू की गई क्विक डिलीवरी फीचर के लिए हम जोमैटो पर लिस्टेड रेस्टोरेंट को 15 मिनट के अंदर डिलीवरी की पेशकश करने में सक्षम बना रहे हैं।

मोतीलाल ओसवाल पर 7 लाख का जुर्माना

नई दिल्ली। मार्केट रेगुलेटर सिक्योरिटी एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) ने स्टॉक ब्रोकर और डिपॉजिटरी पार्टिसिपेंट्स नियमों के उल्लंघन के लिए मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड पर 7 लाख रुपये का जुमार्ना लगाया है। सेबी के आदेश के मुताबिक कंपनी को 45 दिन के भीतर जुर्माना भरने का निर्देश दिया गया है। सेबी ने शेयर ब्रोकर और डिपॉजिटरी भागीदार मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड का अप्रैल, 2021 से जून, 2022 तक की अवधि के लिए शेयर बाजारों और डिपॉजिटरी के साथ संयुक्त रूप से जांच की। इसके बाद सेबी 4 जुलाई 2024 को ब्रोकिंग फर्म को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। सेबी के नोटिस में मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज पर जो मुख्य आरोप लगाए गए।

सोने के भाव रिकॉर्ड स्तर पर, चांदी के भी बढ़े दाम

नई दिल्ली। आम बजट से पहले सोने-चांदी के वायदा कारोबार में शुक्रवार को तेजी देखने को मिल रही है। सोने के वायदा भाव तो बीते कुछ दिनों से नया रिकॉर्ड बना रहे हैं। शुक्रवार को इसके भाव 82,415 रुपये के सार्वजनिक उच्च स्तर पर पहुंच गए। चांदी के वायदा भाव भी तेजी के साथ खुले। सोने के वायदा भाव 82,400 रुपये के करीब, जबकि चांदी के वायदा भाव 94000 रुपये के करीब कारोबार कर रहे थे। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोने-चांदी के वायदा भाव तेजी के साथ कारोबार कर रहे हैं। सोने के वायदा भाव की शुरूआत तेजी के साथ हुई।

ईवी से जुड़ी भ्रांतियों को दूर कर टाटा ईवी

नई दिल्ली। टाटा ईवी, ईवी से जुड़ी भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास कर रही है। ईवी से जुड़ी एक आम भ्रांति यह है कि उनकी रेंज सीमित होती है, लेकिन टाटा ईवी ने इस विचार को गलत साबित किया है। नैक्सान ईवी 45 और क्रूव ईवी जैसे प्रोडक्ट्स ने रेंज की समस्या का समाधान किया है, जिनकी अराई द्वारा प्रमाणित रेंज 489-502 किमी है। ये वाहन फास्ट चार्जिंग को भी सपोर्ट करते हैं, जिससे महज 40 मिनट में बैटरी 10 से 80 प्रतिशत तक चार्ज हो जाती है। इसके अलावा, क्रूव ईवी 70 किलोवॉट प्लस चार्जर का उपयोग कर 15 मिनट में 150 किमी की रेंज जोड़ता है, जो इसे और भी आकर्षक बनाता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि टाटा ईवीने ईवी की लागत को प्रतिस्पर्धी बनाया है। अब क्रूव ईवी और नैक्सान ईवी की कीमत आईसीई वाहनों के बराबर हो गई है, और इनमें अधिक फीचर्स और सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। इसके अलावा, ईवी का रखरखाव पारंपरिक वाहनों से कम खचीर्ला होता है, जिससे पांच साल में रुपए 4.2 लाख तक की बचत होती है। टाटा ईवी ने सुरक्षा के मामले में भी नए मानक स्थापित किए हैं। पंच ईवी, नैक्सान ईवी और क्रूव ईवी सभी ने बीएनसीएपी से 5-स्टार सेफ्टी रेटिंग प्राप्त की है।

सीनियर सिटिजन्स को इंश्योरेंस प्रीमियम में राहत : आईआरडीएआई

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय इंश्योरेंस रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी (आईआरडीएआई) ने हाल ही में एक महत्वपूर्ण निर्देश जारी किया है, जिसमें सीनियर सिटीजन्स को हेल्थ इंश्योरेंस प्रीमियम में बड़ी राहत प्रदान की गई है। इस निर्देश के अनुसार इंश्योरेंस कंपनियों को सीनियर सिटीजन पॉलिसीहोल्डर्स के लिए प्रीमियम में 10 फीसदी से अधिक की बढ़ोतरी करने पर रोक लगा दी गई है। आईआरडीएआई के इस नए निर्देश का मुख्य उद्देश्य सीनियर सिटीजन्स की सुरक्षा और उनके हेल्थ इंश्योरेंस को सस्ते और उचित बनाए रखना है। पिछले कुछ सालों में हेल्थ इंश्योरेंस प्रीमियम में भारी बढ़ोतरी के कई मामले सामने आए थे, जिसके कारण

सीनियर नागरिकों को अत्यधिक फिनांसियल बोझ झेलना पड़ रहा था। आईआरडीएआई ने इस समस्या का समाधान निकालने के लिए यह निर्देश जारी किया है। अब हेल्थ या जनरल इंश्योरेंस कंपनियों को प्रीमियम में 10 फीसदी से अधिक की बढ़ोतरी करने से पहले आईआरडीएआई के पूर्व अनुमोदन प्राप्त करना होगा। इसके लिए उन्हें एक औपचारिक आवेदन प्रस्तुत करना होगा और रेगुलेटरी उनके जस्टिफिकेशन को मूल्यांकन करेगा। सिर्फ उचित तथा आवश्यक माने गए बढ़ोतरी को ही मंजूरी दी जाएगी। इसके साथ ही, क्लक्कने विभिन्न उपाय भी किए हैं सीनियर सिटीजन की सुरक्षा में सुधार के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए इंडिविजुअल हेल्थ इंश्योरेंस प्रोडक्ट को लेकर इंश्योरेंस कंपनियों को निर्देशित किया गया है। और उन्हें वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष ध्यान देने का आदेश दिया गया है। इसके अलावा, स्वास्थ्य बीमा कवरेज के लिए स्टैंडर्डाइज पैकेज पर भी बातचीत के निर्देश जारी किए गए हैं। आईआरडीएआई के इन कदमों से, सीनियर सिटीजन्स को हेल्थ इंश्योरेंस के लिए अधिक सुरक्षित और सस्ते विकल्प मिलेंगे, जिससे उन्हें फिनांसियल तनाव से बचाने में मदद मिलेगी।

सैमसंग ने लॉन्च की 2025 बेस्पोक एआई विंडफ्री एसी रेंज

एजेंसी

पटना/रांची। उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र की अग्रणी कंपनी सैमसंग ने आज अपनी नई 2025 बेस्पोक एआई विंडफ्री एयर कंडीशनर सीरीज लॉन्च की। अत्याधुनिक एआई तकनीक और प्रीमियम डिजाइन से लैस इस सीरीज में 19 नए मॉडल शामिल हैं, जो भारतीय उपभोक्ताओं की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए तैयार किए गए हैं। विंडफ्री कूलिंग तकनीक से लैस ये एयर कंडीशनर 23,000 माइक्रो होल्स के जरिए ठंडी हवा को समान रूप से फैलाते हैं, जिससे सीधा हवा का झोंका महसूस नहीं होता। एआई फास्ट और कम्फर्ट कूलिंग फीचर से कमरा तेजी से ठंडा होता है और फिर ऊर्जा बचाने के लिए कूलिंग को ऑटोमैटिक एडजस्ट करता है। सैमसंग इंडिया के डिजिटल अप्लायंसेज सीनियर डायरेक्टर गुरफान आलम ने कहा कि यह नई सीरीज भारतीय गर्मियों की चुनौतियों को ध्यान में रखकर विकसित की गई है और कूलिंग अनुभव को नए स्तर पर ले जाती है। ऊर्जा दक्षता, स्मार्ट कनेक्टिविटी और आधुनिक जीवनशैली को ध्यान में रखते हुए तैयार किए गए ये एसी भारतीय उपभोक्ताओं के लिए एक बेहतरीन विकल्प होंगे। सैमसंग ने भारतीय एयर कंडीशनर बाजार में अपनी स्थिति और मजबूत करने की दिशा में कदम बढ़ाया है और कंपनी को उम्मीद है कि 2025 में बिक्री में और तेजी आएगी।

राष्ट्रीय राजमार्गों की निर्माण गुणवत्ता बढ़ाने व ठेकेदारों की जिम्मेदारी तय करने का काम किया : गडकरी

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि राष्ट्रीय राजमार्ग हमारी राष्ट्रीय संपत्ति हैं। हमने उनकी गुणवत्ता और सुरक्षा बढ़ाने पर बहुत जोर दिया है। हमने निर्माण की गुणवत्ता बढ़ाने और कार्य प्रणाली में पारदर्शिता बढ़ाने के लिए ठेकेदारों की ज़िम्मेदारी तय करने के उपाय किए हैं। यह केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) के नई दिल्ली में आयोजित एक हितधारक परामर्श कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। यह कार्यशाला गुरुवार को हुई थी। केंद्रीय मंत्री ने अपने संबोधन में कहा, प्रौद्योगिकी एक महान सक्षमकर्ता है और स्वचालित और बुद्धिमान मशीन-सहायता प्राप्त निर्माण को अपनाना सही दिशा में एक कदम है। उन्होंने कहा कि हमने लखनऊ-कानपुर एक्सप्रेसवे पायलट परियोजना में सफलता हासिल की है और जल्द ही हम इस तकनीक को अन्य परियोजनाओं में भी लागू करेंगे। इस अवसर पर सड़क परिवहन और राजमार्ग राज्यमंत्री अजय टम्टा ने कहा कि भारत ने विश्व स्तरीय सड़कों और राजमार्गों के विकास में उल्लेखनीय प्रगति की है, जिससे हमारे बुनियादी ढांचे में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस परिवर्तन में प्रत्येक हितधारक की अहम भूमिका है। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, सेंसर, उपग्रह और वास्तविक समय की निगरानी जैसी उन्नत तकनीक का लाभ उठाना प्रगति को गति देने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

एनएचएआई के एक हितधारक परामर्श कार्यशाला को केंद्रीय मंत्री ने किया संबोधित

सैमसंग ने एजुकेशन को दी नई दिशा

रांची। इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग ने ईएमबीआईबीई के साथ एक नई साझेदारी की घोषणा की है। ईएमबीआईबीई एक एआई-आधारित पर्सनलाइज्ड लर्निंग प्लेटफॉर्म है, जिसे छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और सहज बनाने के लिए डिजाइन किया गया है। इस सहयोग के तहत ईएमबीआईबीई को सैमसंग के एजुकेशन हब ऐप में जोड़ा जाएगा। यह ऐप विशेष रूप से टीवी पर शैक्षिक अनुभव को बेहतर बनाने के लिए तैयार किया गया है, जिससे छात्रों को एक व्यक्तिगत और इंटरएक्टिव सीखने का अनुभव मिलेगा। इस साझेदारी का उद्देश्य छात्रों को उनकी पढ़ाई में सहायता प्रदान करना है, चाहे वे सीबीएसई, आईसीएसई, आईबी, कैम्ब्रिज या किसी राज्य बोर्ड के पाठ्यक्रम में हो। इसके साथ ही, यह आईआईटी जेईई और एनईईटी जैसी प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी में भी मदद करेगा।

सलमान खान के साथ नयर्रा बनर्जी की केमिस्ट्री ने किया हैरान

एजेंसी

मुंबई। अभिनेत्री नयर्रा एम बनर्जी एक ऐसी अभिनेत्री हैं जिन्होंने अपने पेशेवर जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए हमेशा सीमाओं को आगे बढ़ाया है। उनका जीवन में हमेशा एक अच्छा रवैया रहा है और अपनी खुद की सनसनी बनने की उनकी क्षमता ने उन्हें पूरे देश में अपने प्रशंसकों और प्रशंसकों के बीच इतना लोकप्रिय और पसंदीदा बना दिया है। दक्षिण क्षेत्रीय फिल्म उद्योग में अपने काम से लेकर भारतीय टीवी में अपने काम तक, नायरा देश के सभी क्षेत्रों में दर्शकों के साथ जुड़ने में कामयाब रही हैं और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आगे की यात्रा केवल बड़ी और बेहतर होने के लिए तैयार है। बिग बॉस 18 में नयर्रा का एक दिलचस्प सफर रहा। हालाँकि कई लोगों ने उनकी बेदखली को अनुचित कहा

क्योंकि उन्हें लगा कि वह ट्रॉफी के लिए एक मजबूत दावेदार हैं। शानदार दिवा को हाल ही में बिग बॉस 18 के फिनाले में उपस्थित होने के लिए आमंत्रित किया गया था, जहां एक बार फिर वह अपने अच्छे लुक और करिश्माई सुंदरता के साथ अपना जादू बुनने में कामयाब रही। हालाँकि, मंच पर उनके सभी अद्भुत क्षणों के बीच, सलमान खान के साथ उनका मनमोहक नृत्य क्षण वास्तव में सबसे अलग था। सलमान खान, आकर्षक और मजाकिया व्यक्तित्व होने के नाते नयर्रा की प्रशंसा कर रहे थे और कुछ ही समय में मस्ती के मूड ने वहां की स्थिति को रोशन कर दिया। और दोनों को फिल्म सुल्तान के रोमांटिक ट्रैक 'जुग घूमेया' की धुनों पर थिरकते हुए देखा गया। उन कुछ मिनटों के लिए उनकी केमिस्ट्री अपने चरम पर थी और इसने कुछ प्रशंसकों को आश्चर्यचकित कर दिया कि अगर वे भविष्य में जल्द ही किसी फिल्म में एक साथ काम करते हैं तो यह कितना अद्भुत होगा।

वेस्टर्न डिजिटल ने शैक्षणिक संस्थानों में सीसीटीवी स्टोरेज संभालने के लिए महत्वपूर्ण समाधान पेश किए

एजेंसी

रांची। सीसीटीवी शैक्षणिक संस्थानों में सुरक्षा बढ़ाने में एक अहम भूमिका निभाते हैं। बड़े शिक्षा परिसरों के विशाल सर्विएलेंस नेटवर्क में लगातार रिकॉर्डिंग करने, डेटा को सुरक्षित रूप से स्टोर करने, और फुटेज तुरंत प्राप्त करने के लिए प्रभावशाली स्टोरेज समाधान बहुत आवश्यक होते है डब्लूडी पर्पल प्रो की हार्ड डिस्क ड्राईव 24/7 रिकॉर्डिंग करते रहने के लिए बनाई गई हैं। ये हाई कैपेसिटी के साथ विश्वसनीयता भी प्रदान करती हैं। ऑलफ्रेम टेक्नोलॉजी वाली ये ड्राईव वीडियो प्लेबैक बढ़ाकर फ्रेम लॉस को कम करती हैं, जिससे संचालन सुगम बनता है। आउटडोर कैमरे बाहर लगे होते हैं, जो अत्यधिक खराब मौसम को भी झेलते हैं, ऐसे में डब्लूडी पर्पल एससी अल्ट्रा एंड्योरेंस माईक्रो एसडी कार्ड जैसे टिकाऊ समाधान भरोसेमंद परफॉर्मेंस प्रदान करते हैं, जिनके लिए मेंटेनेंस की जरूरत भी बहुत कम होती है। वेस्टर्न डिजिटल के डायरेक्टर सेल्स, एमईए एंड इंडिया, ओवेस मोहम्मद ने कहा, शैक्षणिक संस्थान अपने परिसरों में विस्तृत सर्विएलेंस सिस्टम्स का उपयोग कर रहे हैं।

सेंसेक्स 740, निफ्टी 258 अंक ऊपर आया

एजेंसी

मुम्बई। भारतीय शेयर बाजार शुक्रवार को बढ़त के साथ बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन बाजार में ये उछाल दुनिया भर के बाजारों से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही खरीदारी हावी रहने से आया है। आर्थिक सर्वेक्षण के कारण भी आज बाजार में उत्साह का माहौल रहा। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 740.76 अंक करीब 0.97 फीसदी बढ़कर 77,500.57 पर पहुंच गया। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी

258.90 अंक तकरीबन 1.11 फीसदी ऊपर आकर 23,508.40 पर बंद हुआ। आज कारोबार के दौरान कुल 2,635 शेयर हरे निशान में रहे जबकि 1,131 शेयर लाल निशान पर रहे 120 शेयरों में कोई बदलाव नहीं हुआ। निफ्टी पर टाटा कंज्यूमर, ट्रेंट, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, नेस्ले इंडिया और एलएंडटी के शेयरों में तेजी रही जबकि भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, बजाज फिनसर्व, अपोलो हॉस्पिटल्स और जेएसडब्ल्यू स्टील के शेयरों में गिरावट रही। आज कारोबार के दौरान सभी सेक्टोरल इंडेक्स लाभ के साथ ही हरे निशान में बंद हुए। कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, ऑयल एंड गैस, पावर, पीएसयू, रियल्टी और एफएमसीजी 2 फीसदी तक उछले जबकि कैपिटल गुड्स इंडेक्स लगभग 4 फीसदी ऊपर आया। आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत की जीडीपी वृद्धि 2025-26 में 6.3-6.8 फीसदी रहने की संभावना है।

इंडिया यामाहा मोटर ने अपने दो प्रमुख मॉडल की कीमत घटाई

नई दिल्ली। इंडिया यामाहा मोटर ने अपने प्रमुख मॉडल - आर3 और एमटी-03 की कीमत 1.10 लाख रुपये तक कम की है। कंपनी ने शुक्रवार को बताया कि नई कीमतें एक फरवरी, 2025 से प्रभावी होंगी। कंपनी ने बयान में कहा कि यामाहा आर3 की कीमत 3,59,900 रुपये और एमटी-03 की कीमत 3,49,900 रुपये (दिल्ली शोरूम) होगी। इंडिया यामाहा मोटर ने कहा कि प्रीमियम मोटरसाइकिलों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए यह कदम उठाया गया है।

कांजीवरम रेशम से तैयार किए गए कॉचर ब्लेजर में लक्ष्मी मांचू का सौम्य अवतार

एजेंसी

मुंबई। लक्ष्मी मांचू भारतीय मनोरंजन उद्योग में सबसे ग्लैमरस और सनसनीखेज दिवाओं में से एक हैं। अमेरिकी मनोरंजन उद्योग में अपने काम के साथ प्रभाव पैदा करने के बाद उन्होंने अपनी उपस्थिति के साथ दक्षिण क्षेत्रीय मनोरंजन उद्योग पर हावी होने के लिए अपने पंख और क्षितिज का विस्तार किया और तब से उन्होंने वास्तव में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। धीरे-धीरे और लगातार, वह हिंदी मनोरंजन क्षेत्र में भी अपनी जगह बना रही हैं और उनका काम खुद के लिए बोलता है। ओटीटी स्पेस में अच्छी गुणवत्ता के काम से लेकर विश्वसनीय फिल्में करने तक वह हर जगह अपना सर्वश्रेष्ठ कर रही हैं और प्रशंसक उन्हें सभी सही कारणों से पसंद कर रहे हैं। एक रचनात्मक कलाकार के रूप में उन्होंने हमेशा अपनी फैशन क्षमता को अच्छे प्रभाव के लिए उपयोग किया है। वह फैशन की दुनिया में अपने स्वयं के रुझान स्थापित करने में विश्वास करती है और यह अनुमान लगाने के लिए कोई ब्राउनी पॉइंट नहीं है कि इसने वास्तव में उसके लिए चमत्कार किया है और कैसे। वह हाथ से बुने हुए कांजीवरम रेशम से बने स्टाइलिश कॉचर ब्लेजर में बेहद आकर्षक और सम्मोहक लग रही है और हम उससे अपनी नजरें नहीं हटा सकते।

सोलर ऊर्जा से जगमग होंगी महाराष्ट्र की सभी सरकारी इमारतें

मुंबई। पिछले कुछ वर्षों में सौर ऊर्जा का उपयोग बढ़ रहा है और इसके लिए सरकार विभिन्न योजनाएं चला रही है। इसी श्रृंखला में प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना देशभर में अपनी पहचान बना चुकी है। महाराष्ट्र भी इस योजना में अहम भूमिका निभा रहा है और इसके तहत राज्य के 1157 सरकारी इमारतों पर सौर ऊर्जा संयंत्र लगाने का कार्य शुरू किया गया है। अब तक लगे संयंत्रों से लोग बिजली के बिलों से मुक्ति पा रहे हैं। राज्य सरकार की ओर से जारी निर्देशों के अनुसार अब तक सौर ऊर्जा संयंत्र लगाने की दिशा में कदम बढ़ाया जा रहा है। सभी सरकारी इमारतों को 15 दिसंबर 2025 से पहले सौर ऊर्जा से विद्युतीकरण करने का मानद लक्ष्य रखा गया है। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एवं वित्त व नियोजन मंत्री ने इस मुद्दे पर समीक्षा बैठक में निर्देश दिया है।

वसंत पंचमी पर कलाकारों ने बताए जीवन में सीखने के महत्व

एजेंसी

मुंबई। वसंत पंचमी वसंत ऋतु की शुरूआत का प्रतीक है और यह ज्ञान, बुद्धि और नए आरंभों का उत्सव मनाने का दिन है। जहां सोनी सब के कलाकार करुणा पांडे, नवीन पंडिता और

पंकज बेरी ने माँ सरस्वती को समर्पित इस पर्व से जुड़ी अपनी यादें और इसके महत्व पर अपने विचार साझा कर रहे हैं। करुणा पांडे शो (पुष्पा इम्पॉसिबल) ने कहा, मैं उत्तराखंड से हूं, जहाँ वसंत पंचमी बड़े ही श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाई जाती है। परिस्थितियाँ कैसी भी हों, हमेशा बदलाव को अपनाना और सीखते रहना चाहिए। नवीन पंडिता (शो पुष्पा इम्पॉसिबल) ने कहा, वसंत पंचमी मेरे लिए हमेशा खास रही है क्योंकि यह ज्ञान और बुद्धि के महत्व को दर्शाती है। बचपन में मैं अपने परिवार को इस दिन माँ सरस्वती की पूजा करते और ज्ञान व विद्या के लिए आशीर्वाद मांगते देखता था। पंकज बेरी (शो तेनाली रामा) ने कहा, वसंत पंचमी मेरे लिए हमेशा खास रही है। जब मैं बच्चा था, तो मेरे माता-पिता मुझसे मेरी किताबें माँ सरस्वती के सामने रखने और परीक्षा से पहले उनका आशीर्वाद लेने को कहते थे। माँ सरस्वती की कृपा का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे हर दिन सीखने और आगे बढ़ने की शक्ति दी है।

स्विगी डाइनआउट ने जमशेदपुर में रखा कदमः मिलेगी 50 प्रतिशत तक की छूट

❖ मोचा कैफे एंड बार, ऑक्सीजनझद स्काई लाउंज आदि रेस्टोरेंट स्विगी डाइनआउट से जुड़े

एजेंसी

जमशेदपुर। भारत के अग्रणी ऑन-डिमांड कन्वीनियंस प्लेटफॉर्म स्विगी ने स्टील सिटी जमशेदपुर में स्विगी डाइनआउट सर्विस शुरू की है। इस लॉन्चिंग के साथ शहर के स्वाद के दीवानों को एक्सक्लूसिव डाइनिंग ऑफर्स का आनंद मिलेगा। इस सर्विस की शुरूआत से शहर के लोग अब अपने डाइनिंग बिल पर 50 प्रतिशत तक की छूट पा सकते हैं। फर्स्ट-टाइम यूजर्स को 250 रुपये की अतिरिक्त छूट के साथ स्विगी डाइनआउट ने डाइनिंग आउट के हर अनुभव को रिवार्डिंग बना दिया है। 2024 में स्विगी डाइनआउट ने भारत के 48 शहरों में 2.2 करोड़ से ज्यादा लोगों को जोड़ा और उन्हें रेस्टोरेंट बिल पर कुल 500 करोड़ रुपये से ज्यादा की बचत करने में सहायता की। स्विगी डाइनआउट ने जमशेदपुर के प्रतिष्ठित एवं लोकप्रिय रेस्टोरेंट्स मोचा कैफे एंड बार, मून ब्रूअरी एंड रेस्टोरेंट, मेराकी कुलिनरी बार एंड किचन, उडिपीज उपहार, ऑक्सीजन - द स्काई लाउंज, जिंग-बाय द गोल्डन आइरिस और औरस रेस्ट्रो लाउंज से हाथ मिलाया है। इस विस्तार के मौके पर स्विगी डाइनआउट के वाइस प्रेसिडेंट, सेल्स स्वप्निल बाजपेयी ने कहा, जमशेदपुर में स्विगी डाइनआउट की लॉन्चिंग पूरे देश में डाइनिंग एक्सपीरियंस को बेहतर करने की हमारी प्रतिबद्धता का हिस्सा है। मून ब्रूअरी एंड रेस्टोरेंट के मालिक राजमन ने कहा, स्विगी डाइनआउट से साझेदारी हमारे लिए टेबल रिजर्वेशन सिस्टम को प्रबंधित करने में बहुत मददगार रही है। इस साझेदारी ने जमशेदपुर में हमारी पहुंच को बढ़ाया है और यहां के लोगों के लिए डाइनिंग के अनुभव को नई ऊंचाई दी है। जमशेदपुर के लोकप्रिय डाइनिंग डेस्टिनेशन औरस ने भी अपने उल्लेखनीय विकास के लिए स्विगी डाइनआउट का धन्यवाद किया है।

होंडा मोटरसाइकिल और स्कूटर इंडिया ने धनबाद, झारखंड में सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाया

एजेंसी

धनबाद। सड़क सुरक्षा के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता को दशार्ते हुए, होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया (ल्टरक) ने आज धनबाद, झारखंड में सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान आयोजित किया। इस पहल के तहत, बड्स गार्डन स्कूल के 1000 से अधिक छात्रों और स्टाफ सदस्यों को सड़क सुरक्षा की शिक्षा दी गई, जिससे ल्टरक की युवा पीढ़ी में जिम्मेदार सड़क व्यवहार को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता मजबूत हुई। युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकारते हुए, ल्टरक ने इस अभियान को सुरक्षित सड़क प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए इंटरैक्टिव और रोचक गतिविधियों के माध्यम से डिजाइन किया। स्कूलों, कॉलेजों और सरकारी व गैर-सरकारी संस्थानों में ऐसे अभियान नियमित रूप से चलाकर, ल्टरक सड़क दुर्घटनाओं को कम करने और जिम्मेदार सड़क उपयोग की संस्कृति को विकसित करने का प्रयास कर रहा है। धनबाद में आयोजित इस अभियान में कई गतिविधियाँ शामिल थीं, जो सड़क सुरक्षा शिक्षा को व्यापक और इंटरैक्टिव बनाने के लिए तैयार की गई थीं। प्रतिभागियों को सैद्धांतिक सुरक्षा पाठ, खतरे की पूवार्नुमान प्रशिक्षण, सड़क सुरक्षा क्विज, हेलमेट जागरूकता सत्र, और व्यावहारिक राइडिंग ट्रेनर अभ्यास का अनुभव दिया गया। इन गतिविधियों को इस तरह डिजाइन किया गया था कि वे जानकारीपूर्ण और आकर्षक हों।

खास खबर

आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी का उद्घाटन 11 को

लाहौर। पाकिस्तान में 19 फरवरी से होने वाले आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान टीम की घोषणा अब तक नहीं हुई है पर टूनामेंट के उद्घाटन समारोह के लिए लाहौर स्टेडियम में 16 फरवरी की तारीख तय कर दी गई है। वहीं कराची के नेशनल स्टेडियम में 11 फरवरी को उद्घाटन समारोह होगा। इसमें पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी का भी सम्मान किया जाएगा। इस प्रकार दो अलग-अलग जगहों पर उद्घाटन समारोह होगा। चैंपियंस ट्रॉफी का अधिकारिक उद्घाटन 16 फरवरी को लाहौर के हजूरी बाग में होगा। इसके अलावा गद्दाफी स्टेडियम में उद्घाटन समारोह की झलक देखने को मिलेगी। ऐसा माना जा रहा है कि चैंपियंस ट्रॉफी समारोह में बड़ी हस्तियों के अलावा क्रिकेटरों और आईसीसी के बड़े अधिकारी शामिल रहेंगे। माना जा रहा है कि टूनामेंट के उद्घाटन समारोह में तकरीबन सारी टीमों के कप्तान नजर आएंगे पर भारतीय कप्तान रोहित शर्मा इसमें शामिल नहीं होंगे। चैंपियंस ट्रॉफी के मुकाबले 19 फरवरी से होंगे। इस टूनामेंट का मेजबान देश पाकिस्तान है पर भारतीय टीम पाकिस्तान की जगह अपने मुकाबले हाइब्रिड मॉडल के तहत दुबई में खेलेगी इसमें भारतीय टीम अपना पहला मुकाबला बांग्लादेश के खिलाफ खेलेगी।

पाक क्रिकेट शादाब विवादों में आये

लाहौर। पाकिस्तानी क्रिकेटर शादाब खान एक बार फिर विवादों में आ गये हैं। शादाब ने कहा है कि क्रिकेटरों के अभिनेत्रियों को संदेश भेजने में कोई गलती नहीं है। शादाब ने एक शो में कहा कि इस प्रकार की बातों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश जा रहा है। शादाब से शो में एक प्रशंसक ने पूछा था कि उन्होंने कभी अभिनेत्रियों को सोशल मीडिया पर संदेश भेजे हैं क्योंकि कई अभिनेत्रियों ने दावा किया था कि क्रिकेटर उन्हें सोशल मीडिया पर संदेश भेजते हैं। शादाब ने कहा कि जो सोशल मीडिया इस्तेमाल करते हैं उनके पास ऐसे संदेशों को ब्लॉक करने या अनदेखा करने की आजादी होती है। हर किसी के पास ब्लॉक करने का विकल्प होता है। अगर आपको यह पसंद नहीं है, तो जवाब न दें। शादाब की टिप्पणियां टिकटॉकर शहताज खान के दावों के जवाब में आई हैं, जिन्होंने पिछले साल आरोप लगाया था कि वह व्हाट्सएप और इंस्टाग्राम पर उनके संपर्क में थी और शादाब ने उन्हें शादी का प्रस्ताव भी दिया था। हालांकि शादाब की शादी पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर सकलैन मुश्ताक की बेटी मलायका से हुई है। शहताज ने शादाब की शादी पर निराशा व्यक्त करते हुए दावा किया कि उस समय उन्हें पता नहीं था कि शादाब शादीशुदा है।

लीजेंड डिक बटन का निधन

न्यूयॉर्क। दो बार के ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता और पांच बार के विश्व चैंपियन डिक बटन का 95 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उनके बेटे एडवर्ड ने उनकी मौत की पुष्टि की। बटन, जो पहले अमेरिकी पुरुष ओलंपिक फिगर स्केटिंग चैंपियन थे, ने 1948 और 1952 में स्वर्ण पदक जीते। उन्होंने पहली बार डबल एक्सल और ट्रिपल जंप जैसी तकनीकों को प्रतियोगिता में शामिल किया, जिससे स्केटिंग में क्रांतिकारी बदलाव आया। स्केटिंग के प्रति उनके योगदान को सम्मान देते हुए, बोस्टन स्केटिंग क्लब ने उनके नाम पर एक ट्रॉफी रूम स्थापित किया और डिक बटन आर्टिस्टिक फिगर स्केटिंग शोकेसर का आयोजन किया।प्रतियोगिता से संन्यास लेने के बाद, बटन एक प्रतिष्ठित टीवी कमेंटेटर बने और स्केटिंग के तकनीकी पहलुओं को लोकप्रिय बनाया। उन्होंने पेशेवर स्केटिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया, जिससे खिलाड़ियों को अपने करियर के बाद भी मंच मिला। यूएस फिगर स्केटिंग ने उन्हें फिगर स्केटिंग में क्रांति लाने वाला बताया और उनके परिवार व प्रियजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की।

भारतीय टीम अंडर-19 टी20 महिला विश्व कप के फाइनल में पहुंची

इंग्लैंड को 9 विकेट से हराया

एजेंसी

क्वालालंपुर । भारतीय टीम ने सेमीफाइन मुकाबले में इंग्लैंड को 9 विकेट से हराकर अंडर-19 महिला टी20 वर्ल्ड कप के फाइनल में प्रवेश किया है। यहां अब भारतीय टीम रविवार को खिताब के लिए दक्षिण अफ्रीका से मुकाबला करेगी। दक्षिण अफ्रीका ने एक अन्य सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया को हराकर फाइनल में जगह बनायी है। भारत और इंग्लैंड का मुकाबला एकतरफा रहा। भारतीय टीम ने इस मैच में इंग्लैंड को 113 रनों पर आउट करने के बाद केवल 15 ओवर में ही एक विकेट के नुकसान पर लक्ष्य हासिल कर लिया। 114 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारतीय टीम ने तेज शुरूआत की। सलामी बल्लेबाज जी. कमलिनी ने नाबाद 56 रन रन बनाये जबकि गोंगडी त्रिषा ने 35 रन बनकार पहले विकेट के लिए 60 रन जोड़े। त्रिषा के आउट होने के बाद सानिका चालके ने 11 रन बनाए। कमलिनी और सानिका ने 15वें ओवर में टीम को एक विकेट पर 117 रनों तक पहुंचाकर जीत दिला दी। वहीं इससे पहले बल्लेबाजी करते हुए इंग्लैंड ने शुरूआत में ही अपने दो विकेट खो दिये। इसके बाद डेविना पेरिन ने 45 और एबी नॉरग्रोव ने 30 रन बनाकर टीम को संभालने का प्रयास किया पर सफल नहीं रहीं। भारतीय गेंदबाज आयुषी शुक्ला ने इन दोनों को ही आउट कर इंग्लैंड की उम्मीदों पर पानी फेर दिया। इसके बाद वैष्णवी शर्मा ने 3 विकेट लेकर इंग्लैंड को दबाव में ला दिया। वहीं पारुलिका सिसोदिया ने भी तीन विकेट लिए।

बीसीसीआई सचिन को लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से करेगा सम्मानित

एजेंसी

मुम्बई । भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर को सी के नायडू लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित करेगा। बीसीसीआई शनिवार को अपने वार्षिक समारोह में सचिन को ये लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड प्रदान करेगा। सचिन ने भारतीय टीम की ओर से 664 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं। वह क्रिकेट इतिहास में सबसे अधिक टेस्ट और एकदिवीसय रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं। बोर्ड के एक अधिकारी ने बताया, ह्यहां, उन्हें वर्ष 2024 के लिए सी के नायडू लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। तेंदुलकर के नाम 200 टेस्ट और 463 एकदिवसीय मैच क्रिकेट मैच हैं। जो इतिहास में किसी भी खिलाड़ी के सबसे अधिक मैच हैं। उन्होंने एकदिवसीय में 18,426 रनों के अलावा 15,921 टेस्ट रन भी बनाए हैं हालांकि वह शानदार करियर में केवल एक टी20 अंतरराष्ट्रीय ही खेल पाये। इससे पहले लाला अमरनाथ, सैयद मुश्ताक अली, विजय हजारे, केएन प्रभु, हेमू अधिकारी, सुभाष गुप्ते, एमएके पटौदी, बीबी निंबालकर, चंदू बोर्डे, बिशन सिंह बेदी, एस वेंकटराघवन, ईएएस प्रसन्ना, बीएस चद्रशेखर, मोहिंदर अमरनाथ, सलीम दुरानी, अजीत वाडेकर, सुनील गावस्कर, कपिल देव, दिलीप वेंगसरकर, सैयद किरमानी, राजिंदर गोयल, पद्माकर शिवलकर, के श्रीकांत, रवि शास्त्री और फारुख इंजीनियर को भी सीके नायडू पुरस्कार मिला था।

बिद्यारानी देवी ने जीता स्वर्ण, मणिपुर के नाम दो पदक

एजेंसी

देहरादून। मणिपुर की स्टार भारोत्तोलक एस बिंद्यारानी देवी ने राष्ट्रीय खेलों में शानदार प्रदर्शन करते हुए महिलाओं के 55 किग्रा वर्ग में स्वर्ण पदक अपने नाम किया। उन्होंने स्नैच वर्ग में 88 किलोग्राम वजन उठाकर नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड स्थापित किया।
राष्ट्रमंडल खेलों की रजत पदक विजेता बिंद्यारानी ने क्लीन एंड जर्क में भी अपना दबदबा बनाए रखा। उन्होंने पहले प्रयास में 107 किग्रा भार उठाया, हालांकि दूसरा प्रयास 112 किग्रा पर असफल रहा। लेकिन तीसरे प्रयास में 113 किग्रा उठाकर उन्होंने दमदार वापसी की। कुल 201 किग्रा भार उठाकर बिंद्यारानी ने अपने राष्ट्रीय रिकॉर्ड (202 किग्रा) से सिर्फ 1 किलोग्राम कम वजन उठाया, लेकिन स्वर्ण पदक जीतने में सफल रहीं। इस जीत के साथ, बिंद्यारानी ने महिलाओं के 55 किग्रा वर्ग में स्नैच, क्लीन एंड जर्क और टोटल लिफ्ट झ्र तीनों राष्ट्रीय रिकॉर्ड अपने नाम कर लिए। उन्होंने अपनी जीत पर खुशी जाहिर करते हुए कहा, मैं अपने प्रदर्शन से संतुष्ट हूं। एक नया रिकॉर्ड बनाना हमेशा खास होता है। मणिपुर की झोली में एक और पदक जोड़ते हुए एल. नीलम देवी ने कांस्य पदक जीता। उन्होंने स्नैच में 81 किग्रा और क्लीन एंड जर्क में 101 किग्रा भार उठाकर पोडियम पर जगह बनाई। वहीं, बंगाल की शरबानी दास ने 81 किग्रा स्नैच और 106 किग्रा क्लीन एंड जर्क के साथ रजत पदक अपने नाम किया। बिंद्यारानी की जीत और नीलम के कांस्य पदक ने भारोत्तोलन में मणिपुर के दबदबे को और मजबूत किया। यह राज्य की प्रतिभा और उत्कृष्ट प्रशिक्षण प्रणाली का प्रमाण है, जिसने भारतीय भारोत्तोलन में इसे एक पावरहाउस बना दिया है।

राष्ट्रीय खेल

विराट को रणजी के लिए मिल रहे 50 हजार रुपये प्रतिदिन

एजेंसी

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली आजकल दिल्ली की ओर से रणजी ट्रॉफी में खेल रहे हैं। विराट एक दशक के बाद घरेलू टूनामेंट खेल रहे हैं। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने ऑस्ट्रेलिया दौरे में टीम के खराब प्रदर्शन को देखते हुए सभी खिलाड़ियों के लिए घरेलू टूनामेंट खेलना अनिवार्य कर दिया। उसी को देखते हुए विराट अब रणजी में उतरे हैं हालांकि इसके लिए उन्हें केवल 50 हजार रुपये प्रतिदिन मिल रहे हैं। बीसीसीआई के वेतन ढांचे के अनुसार वर्तमान में 20-40 रणजी ट्रॉफी मैच खेलने वाले खिलाड़ी को प्रति दिन 50,000 रुपये मिलते हैं। वहीं अब तक 23 रणजी मैच खेलकर 1,547 रन बना चुके कोहली इसी श्रेणी में आते हैं, जिसका मतलब है कि वह इस मैच से 50,000 रुपये कमाएंगे। विराट टीम इंडिया के लिए ए प्लस ग्रेड के खिलाड़ी हैं और उनका बोर्ड के साथ सालाना सात करोड़ रुपये का अनुबंध है। इस प्रकार उन्हें प्रति टेस्ट मैच 15 लाख रुपये मिलते हैं।

पांच दिनी शहीद एतवा उरांव क्रिकेट टूर्नामेंट 6 से

▸ टूर्नामेंट में 16 टीमें होंगी शामिल

एजेंसी

रांची। मांडर प्रखंड अंतर्गत बुढ़ाखुखरा स्थित खेल मैदान में पांच दिवसीय शहीद एतवा उरांव क्रिकेट टूर्नामेंट-2025 का आयोजन किया गया है। इस टूनार्मेंट में कुल 16 टीमें शामिल होंगी। आयोजन समिति के अध्यक्ष नेसार खान, उपाध्यक्ष मो. साकिब और वसीम ने संयुक्तरूप से बताया कि टूनार्मेंट का उद्घाटन छह फरवरी, 2025 और समापन 10 फरवरी 2025 को होगा । टूनार्मेंट का उद्घाटन झारखंड सरकार की कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की, प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष श्री बंधु तिर्की, अंजुमन इस्लामिया रातू प्रखंड के सचिव मुख्तार अंसारी और मांडर थाना प्रभारी राहुल संयुक्त रूप से करेंगे। मो. साकिब ने बताया कि टूर्नामेंट के विजेता को 50 हजार रुपए नगद व बड़ा ट्रॉफी, उपविजेता को 30 हजार रुपए नगद व बड़ा ट्रॉफी दिया जाएगा। साथ ही तृतीय और चतुर्थ स्थान पानेवाले टीम को क्रमशः 5500 हजार रुपए नगद व ट्रॉफी व 5000 हजार रुपए नगद व ट्रॉफी देकर पुरस्कृत किया जाएगा। इसके अलावा मैन ऑफ द मैच, मैच ऑफ द सिरीज होने वाले खिलाड़ियों को भी सम्मानित किया जाएगा। मो. साकिब ने बताया कि शहीद एतवा उरांव के नाम से पिछले 25 साल से फुटबॉल टूनार्मेंट का आयोजन किया जा रहा है। क्रिकेट टूनार्मेंट का यह पहला आयोजन है।

अब कोच की भूमिका निभाएंगे मनोज कुमार

नई दिल्ली। पूर्व ओलंपियन मुक्केबाज मनोज कुमार अब कोचिंग करते हुए नजर आयेंगे। मनोज ने लाइट वेल्टरवेट 64 किग्रा में 2010 राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीता था। इसके साथ ही उनके नाम एशियाई चैंपियनशिप में दो कांस्य पदक भी हैं। राष्ट्रमंडल खेलों में दूसरा और अंतिम कांस्य पदक उन्होंने 2018 गोल्ड कोस्ट खेलों में जीता था। मनोज 2012 लंदन और 2016 रियो दि जिनेरियो दोनों में प्री क्वार्टरफाइनल में पहुंचे थे। इस मुक्केबाज ने कहा, ह्यअब मैं 40 साल का हो गया हूं तो मैंने खेल को अलविदा कह कर कोच के तौर पर काम करना तय किया है। अंतरराष्ट्रीय नियमों के अनुसार अब में एमेच्योर प्रतियोगिताओं में भी हिस्सा नहीं ले सकता हूं। मनोज ने अपना मुक्केबाजी करियर 1997 में जूनियर स्तर पर शुरू किया था और 2021 में पटियाला में राष्ट्रीय खेल संस्थान से कोचिंग डिप्लोमा हासिल किया था।

लेग स्पिनर से बल्लेबाज तक की स्मिथ की यात्रा प्रेरिणादायक : गिलक्रिस्ट

एजेंसी

सिडनी। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज एडम गिलक्रिस्ट ने अनुभवी बल्लेबाज स्टीव स्मिथ की जमकर सराहना की है। गिलक्रिस्टने कहा है कि जिस प्रकार स्मिथ ने एक गेंदबाज से अपना करियर शुरू करते हुए धीरे-धीरे बल्लेबाजी में किस्मत आजमायी और आज 10,000 टेस्ट रन उनके नाम है। वह किसी के लिए भी वह प्रेरणादायक उपलब्धि है। गिलक्रिस्ट ने एक लेग स्पिनर से बेस्ट बल्लेबाज बनने के स्मिथ की यात्रा को सराहा है। स्मिथ ने गॉल में श्रीलंका के खिलाफ पहले टेस्ट के दौरान ही अपना 35वां टेस्ट शतक बनाकर टेस्ट में 10,000 रनों का आंकड़ा हासिल किया था। स्मिथ जब ऑस्ट्रेलियाई टीम में आए थे तो उन्हें तब लेग स्पिनर शेन वार्न के उत्तराधिकारी के रूप में देखा जा रहा था पर स्मिथ ने इसके बाद बल्लेबाज के तौर पर उतरते हुए अपनी अलग पहचान बनायी। गिलक्रिस्ट ने स्मिथ की यात्रा पर हैरानी जताते हुए अपने खेल को इतनी अच्छी तरह से विकसित करने के लिए स्मिथ की सराहना की है। गिलक्रिस्ट ने कहा, वह विकल्प कहां होने वाला था? मुझे उसके करियर के बारे में यह काफी आश्चर्यजनक लगता है कि इसकी शुरूआत कैसे हुई। मुझे लगता है कि जो आश्चर्यजनक है उसका एक हिस्सा यह है कि इसकी शुरूआत कैसे हुई और वह आठवें या नौवें नंबर पर लेग स्पिन गेंदबाजी करते हुए टीम में कैसे आए। गिलक्रिस्ट ने कहा कि जिस तरह से उन्होंने अपना खेल विकसित किया और उस पर काम किया, वह बाकी सभी से बिल्कुल अलग था और यह बहुत कुछ कहता है। मानसिक क्षमता और उनकी बल्लेबाजी के मनोविज्ञान से, मुझे यह देखना सबसे आकर्षक लगता है। वह एक कुशल शिल्पकार हैं और वह हमारे महानतम क्रिकेटरों में से एक हैं। स्मिथ ने 115 टेस्ट और 205 पारियों में 56.44 की औसत से 10,103 रन बनाए हैं।

चैंपियंस ट्रॉफी से बाहर हुए मिशेल मार्श

एजेंसी

मेलबर्न । ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर मिशेल मार्श इसी माह होने वाली चैम्पियंस ट्रॉफी से बाहर हो गये हैं। मार्श का बाहर होना ऑस्ट्रेलियाई टीम के लिए करारा झटका है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के अनुसार ऑलराउंडर मार्श चोटिल होने के कारण चैम्पियंस ट्रॉफी में नहीं खेल पायेंगे। वहीं क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने भी माना है कि मार्श अभी अपनी पीठ की चोट से नहीं उबरे हैं। सीए ने कहा, पीठ के निचले हिस्से में दर्द और शिथिलता के कारण मार्श आईसीसी पुरुष चैंपियंस ट्रॉफी से बाहर हो गए हैं। इस बयान में कहा गया, राष्ट्रीय चयन पैनल और ऑस्ट्रेलियाई पुरुष चिकित्सा टीम ने चोट के कारण मार्श को टूनार्मेंट से बाहर कर दिया है। हाल के कुछ सप्ताह में उनकी पीठ के निचले हिस्से का दर्द बढ़ गया था, जिसके कारण मार्श के पुनर्वास में लंबा समय लगेगा। मार्श अब खेल में वापसी की योजना के तहत और अधिक आराम और पुनर्वास की अवधि से गुजरेंगे।
ऑस्ट्रेलियाई चयनकताओं के पास अब अपनी टीम को अंतिम रूप देने के लिए 12 फरवरी तक का समय है और वे इस दौरान मार्श की जगह किसी अन्य खिलाड़ी को टीम में शामिल कर सकते हैं। ऑस्ट्रेलियाई टीम में मैट शॉर्ट और आरोन हार्डी को पहली बार शामिल किया गया है। इसके साथ ही तेज गेंदबाज नाथन एलिस को भी शामिल किया गया है। ये तीनों डेविड वार्नर , कैमरून ग्रीन और सीन एबॉट की शामिल किये गया हैं। ऑस्ट्रेलिया 22 फरवरी को लाहौर में इंग्लैंड के खिलाफ अपने अभियान की शुरूआत करेगा, इसके बाद 25 फरवरी को रावलपिंडी में दक्षिण अफ्रीका से भिड़ेगा और 28 फरवरी को लाहौर में अफगानिस्तान के खिलाफ अपना अंतिम ग्रुप स्तर का मैच खेलेगा।

जिलास्तरीय टी20 क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन

एजेंसी

मधुबनी । मधुबनी रहिका प्रखंड के ग्राम पंचायत सतलखा लकशायर में जिला स्तरीय बीसीसी टी-20 क्रिकेट टूनार्मेंट का आयोजन किया गया सचिव राजेश मंडल,अध्यक्ष अजय पासवान मो नाजिम बाल्मीकि साहनी, कृष्ण चौधरी, जिला प्रवक्ता इंद्रजीत राय, युवा जिला महासचिव मो. मुस्ताक अहमद, पूर्व उपप्रमुख बिस्फी मो. मोहिउद्दीन राजद प्रखंड प्रधान महासचिव कलुआही मिश्रीलाल यादव के उपस्थिति में मुख्य अतिथि युवा नेता आरिफ जिलानी अम्बर सहित विशिष्ट अतिथि युवा राजद जिला सचिव मो.रहीम ने संयुक्त रूप से फीता काट कर मैच का उद्घाटन किया। पहला मैच इस अवसर पर युवा नेता आरिफ जिलानी अम्बर ने कहा कि खेल से शारीरिक मानसिक एवं बौद्धिक विकास के साथ कई प्रकार के बिमारियों से भी मुक्ति मिलती है। इतना ही नहीं खेलों से सामाजिक कौशल का विकास,टीम वर्क की छमता, मस्तिष्क विकास, शारीरिक विकास, इम्यूनिटी के लिए फायदेमंद ,भावनात्मक विकास, धैर्य, सहनशीलता आदि का विकास होता है। इसलिए समय समय पर खेल आवश्यक है इस अवसर पर राजन पासवान, मो. अमशेद,भेदी यादव, विभूति झा,छेदी यादव, मो.एहसान, सूरज पासवान सहित अन्य उपस्थित थे।

गुकेश का 11वें राउंड में वेई यी से मुकाबला

▸ 2800 रेटिंग अंक हासिल करना लक्ष्य

एजेंसी

नई दिल्ली। विश्व चैंपियन डी. गुकेश, टाटा स्टील शतरंज टूनामेंट में मामूली अंतर से आगे चल रहे हैं, उनका सामना 11वें दौर में चीन के वेई यी से होगा, उनका लक्ष्य अपना अपराजेय अभियान जारी रखना और सत्र का पहला बड़ा खिताब हासिल करना है। पांच जीत और पांच ड्रॉ के साथ, गुकेश अपराजित रहे हैं और खिताब जीतने के लिए उन्हें अपने आखिरी तीन मैचों में से सिर्फ.1.5 अंक की जरूरत है। वह वर्तमान में 7.5 अंकों के साथ शीर्ष पर हैं, जो उज्बेकिस्तान के नोडिरबेक अब्दुसत्तोरोव से आधा अंक आगे और हमवतन आर. प्रज्ञानानंद से एक अंक आगे हैं। गुकेश के पास अभी भी सफेद मोहरों के साथ दो गेम हैं - अंतिम दौर में जॉर्डन वैन फॉरेस्ट के खिलाफ और अंतिम दौर में अर्जुन एरिगैसी के खिलाफ। इस बीच, अब्दुसत्तोरोव और प्रज्ञानानंद दोनों को काले मोहरों के साथ दो गेम खेलने हैं, जिससे गुकेश यहाँ अपना पहला खिताब जीतने के लिए सबसे पसंदीदा खिलाड़ी बन गए हैं। उल्लेखनीय रूप से, वह पिछले साल के टाईब्रेकर में वेई यी से हार गए थे, जबकि वे संयुक्त रूप से पहले स्थान पर रहे थे। खिताब से परे, गुकेश 2800 एलो रेटिंग मील के पत्थर का भी पीछा कर रहे हैं। वर्तमान में, वह लाइव रेटिंग में 2794 रेटिंग अंक पर हैं। वह विश्वनाथन आनंद और एरिगैसी के बाद इस निशान को पार करने वाले केवल तीसरे भारतीय बन सकते हैं। 11वें राउंड में, प्रज्ञानानंद का सामना प्री-इवेंट पसंदीदा फैबियानो कारुआना से होगा, जबकि अब्दुसत्तोरोव का सामना विन्सेंट कीमर के मजबूत डिफेंस से होगा। अन्य भारतीय दावेदारों में, पेंटाला हरिकृष्णा के 4.5 अंक हैं, जबकि एरिगैसी और लियोन ल्यूक मेंडोंका तीन-तीन अंक लेकर सबसे नीचे हैं, जिन्हें मजबूत फिनिश की जरूरत है। चैलेंजर्स सेक्शन में, आर. वैशाली ने संभावित 10 में से पांच अंक लेकर शानदार प्रदर्शन किया है, जबकि दिव्या देशमुख के पास दो अंक हैं, जिन्हें देर से वापसी की जरूरत है। चेक जीएम गुयेन थाई दाई वैन 7.5 अंकों के साथ सबसे आगे हैं, उनके बाद हॉलैंड के इरविन एल'अमी सात अंकों के साथ दूसरे स्थान पर हैं।

फ्रांस में महिला विश्वकप स्लेलम की विजेता और पहले स्थान पर रही क्रोएशिया की जिरेंका लूजेटिक , दूसरे स्थान पर रही स्वीडन की सारा हेक्टर वह तीसरे नंबर पर रहीं जर्मनी की लिना डियूर।

जल्द शुरू होगी सुधीर बाबू की सुपरनैचुरल थ्रिलर फिल्म जटाधरा की शूटिंग

सुपरनैचुरल थ्रिलर फिल्मजटाधरा की शूटिंग पर जानकारी सामने आई है। यह मूल रूप से तेलुगु फिल्म है, जिसे पैन इंडिया स्तर पर रिलीज किया जाएगा। इसमें सुधीर बाबू मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। फिल्म की शूटिंग जल्द शुरू होने जा रही है। जी स्टूडियोज ने पोस्ट साझा कर बताया है कि शूटिंग अगले महीने यानी फरवरी से शुरू होगी।

प्राचीन रहस्यों से उठेगा परदा

फिल्मजटाधरा की शूटिंग के लिए सेट हैदराबाद में सजेगा। आज इंस्टाग्राम पर शेयर किए गए पोस्ट में यह जानकारी है। दरअसल, मेकर्स ने फिल्म के तीन पोस्टर शेयर किए हैं। यह हिंदी, अंग्रेजी और तेलुगु भाषाओं में हैं। इसके साथ लिखा है,इंतजार खत्म हुआ! एक खजाना खोजना है, एक अभिशाप से लड़ना है। इस सुपरनैचुरल थ्रिलर में मिथक और रहस्य मिलते हैं। फिल्म में सुधीर बाबू नजर आएंगे। शूटिंग फरवरी से शुरू होगी।

रवीना टंडन के नजर आने की खबर

मीडिया रिपोर्ट्स में ऐसा कहा जा रहा है कि इस फिल्म में अभिनेत्री रवीना टंडन भी नजर आएंगी। रवीना टंडन की दक्षिण भारतीय फिल्मों की बात करें तो उन्हें यश स्टारर केजीएफ- चैप्टर 2 में भी देखा गया था, जिसमें वो नेता के रोल में नजर आई थीं। कहा जा रहा है किजटाधरा में रवीना टंडन नेगेटिव भूमिका में नजर आएंगी।

शिविन नारंग करेंगे निर्देशन

फिल्मजटाधरा का पोस्टर बीते वर्ष अगस्त में जारी किया गया था। अब फिल्म की शूटिंग पर अपडेट आ गया है। इस फिल्म का निर्देशन शिविन नारंग कर रहे हैं। यह एक पैन-इंडिया फिल्म है। इसका निर्माण प्रेरणा अरोड़ा कर रही हैं, जो इससे पहले परी, रूस्तम, पैडमैन और टॉयलेट- एक प्रेम कथा को भी बना चुकी हैं।

प्लास्टिक सर्जरी को गलत नहीं मानती हैं खुशी कपूर

लवयापा में नजर आने वाली अभिनेत्री खुशी कपूर ने अपने चेहरे की सर्जरी को लेकर हो रही बातों पर चुप्पी तोड़ी है। उन्होंने कहा कि पहले उन्हें इस बारे में बात करने से डर लगता था लेकिन अब वे कॉस्मेटिक सर्जरी के बारे में ज्यादा खुलकर बात करती हैं। उन्हें लगता है कि ऐसा करना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है।

लोगों से नफरत मिलने का था डर

कर्ली टेल्स को दिए इंटरव्यू में खुशी कपूर ने कहा कि लोगों से नफरत मिलने के डर से पहले में इस बात को मानने में डरती थी। हालांकि, खुशी को अब लगता है कि सर्जरी करवाना कोई अपराध नहीं है और अगर कोई व्यक्ति ऐसा कुछ करता भी है तो ये कोई गलत बात है।

नाक और होठ की करवाई सर्जरी

खुशी ने कहा कि लोगों को लगता है कि मैंने ऐसा किया। हां, लेकिन ये पूरी तरह से खूबसूरत लगता है। उन्होंने माना कि उन्होंने अपनी फिल्मी शुरुआत से पहले नाक की सर्जरी और होंठों में फिलर करवाया था। खुशी जल्द ही जुनैद खान के साथ फिल्म लवयापा में नजर आने वाली हैं।

दिल्ली के लड़के का निभाया है किरदार

फिल्म में उन्होंने एक स्थानीय दिल्ली के लड़के का किरदार निभाना था। इसके लिए उन्होंने दिल्ली की गलियों में समय बिताया। उन्होंने स्थानीय लोगों से बातचीत की और उनके हाव-भाव और बोलचाल की भाषा को आत्मसात किया। जुनैद ने न केवल दिल्ली की बोली को समझा, बल्कि शहर के अलग-अलग हिस्सों में जाकर उनके रहने के तरीके को भी महसूस किया।

फरवरी में रिलीज होगी फिल्म

फिल्म 7 फरवरी को रिलीज होने जा रही है। इसकी रिलीज से पहले एक दिलचस्प जानकारी सामने आई है। कई समाचार पोर्टल में छपी खबरों की मानें तो इस फिल्म के लिए जुनैद ने काफी ज्यादा मेहनत की है। खुशी के फैंस भी उन्हें बड़े पर्दे पर देखने के लिए बेताब हैं।

डेटिंग की खबरों पर रश्मिका ने लगाई मुहर

रश्मिका मंदाना अगली बार लक्ष्मण उतेकर की पीरियड ड्रामा फिल्म छावा में नजर आएंगी। वह फिल्म के प्रचार में व्यस्त हैं, इस दौरान उन्होंने हाल ही में में अपनी निजी जिंदगी से जुड़ी बड़ी जानकारी दी। अभिनेत्री ने एक इंटरव्यू के दौरान रिलेशनशिप में होने की पुष्टि की है। उन्होंने कहा है कि वह प्यार में हैं। हालांकि, उन्होंने अपने पार्टनर का नाम बताने से परहेज किया, वहीं अब उनके डेटिंग पार्टनर पर चर्चाएं शुरू हो गई हैं। रश्मिका के बारे में खबरें है कि वह अपने डियर कॉमरेड को-स्टार विजय देवरकोंडा के साथ रिलेशनशिप में हैं। अभिनेत्री ने अपने हैप्पी प्लेस के बारे में बात की, वहां उन्होंने बताया कि वह एक पार्टनर हैं।

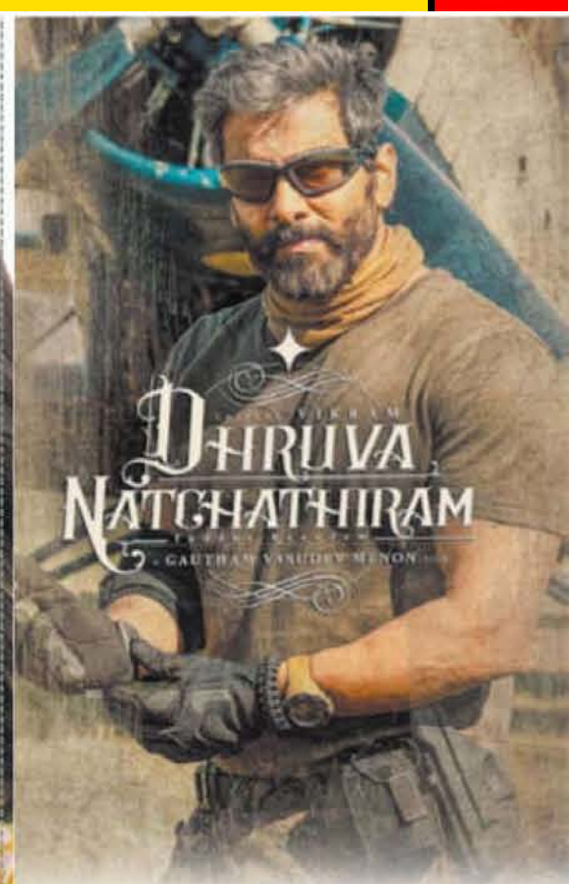

इस साल गर्मियों में रिलीज होगी विक्रम की ध्रुव नचतिरम

साउथ अभिनेता चियान विक्रम इन दिनों अपनी आगामी फिल्मध्रुव नचतिरम को लेकर फिर से सुर्खियों में है। वहीं फिल्म के निर्देशक गौतम वासुदेव मेनन ने एक रोमांच जानकारी से प्रशंसकों को खुश कर दिया है। विक्रम साउथ सिनेमा के दिग्गज निर्देशक मणिरणन्नम की फिल्म पोन्नियिन सेल्वन में ऐश्वर्या राय बच्चन के साथ अहम भूमिका से सभी का दिल जीत चुके हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, हाल ही में एक इंटरव्यू में मेनन ने घोषणा की कि ध्रुव नचतिरम गर्मियों में रिलीज के लिए तैयार है। यह एक एक्शन थ्रिलर फिल्म होगी। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, ध्रुव नचतिरम 24 मार्च 2025 को रिलीज हो सकती है।

फिल्म ध्रुव नचतिरम की स्टार कास्ट

फिल्म ध्रुव नचतिरम में रितु वर्मा को विक्रम की प्रेमिका के रूप में दिखाया गया है। ध्रुव नचतिरम एक लंबे समय से प्रतीक्षित तमिल फिल्म है, जिसकी रिलीज का प्रशंसक इंतजार कर रहे हैं। गौतम वासुदेव मेनन द्वारा लिखित और निर्देशित इस एक्शन थ्रिलर फिल्म में विक्रम और रितु वर्मा के अलावा ऐश्वर्या राजेश, राधिका सरथकुमार, अर्जुन दास, सिमरन, डीडी, आर. पार्थिबन और कई कलाकार नजर आएंगे। वही ध्रुव नचतिरम का हैरिस जयराज नेध्रुव नचतिरम का संगीत तैयार किया है। ध्रुव नचतिरम ओन्ड्रागा एंटरटेनमेंट, कोंडाडुवोम एंटरटेनमेंट और एस्केप आर्टिस्ट मोशन पिक्चर्स का संयुक्त प्रोडक्शन है।

फिल्म की कहानी

ध्रुव नचतिरम एक जासूसी एक्शन थ्रिलर है, जिसमें कहानी जॉन (विक्रम) के इर्द-गिर्द घूमती नजर आएगी, जो न्यूयॉर्क में स्थित एक अंडरकवर एजेंट है। वह और उसकी टीम एक गुप्त ऑपरेशन में शामिल हैं, जिसका नेतृत्व मिस्टर के नाम के एक आदमी कर रहा है। जॉन और उनकी टीम तब हरकत में आती है जब बुरे लोग मिस्टर के को पकड़ लेते हैं, और उन्हें अंधेरे में छोड़ देते हैं। हमले के पीछे संगठन का मकसद क्या है?

यह रोमांस को लेकर क्या बोल गईं पूजा हेगड़े

पूजा हेगड़े ने कुछ ही देर पहले अपनी लेटेस्ट तस्वीरें शेयर की हैं। इन तस्वीरों के साथ पूजा ने कैप्शन में लिखा, बस थोड़ा सा रोमांस ही काफी है। पूजा इन दिनों अपनी आगामी फिल्म देवा को लेकर लगातार सुर्खियों में बनी हुई हैं। देवा में पूजा के साथ शाहिद कपूर नजर आएंगे। देवा के अलावा पूजा दलपति विजय की 69वीं फिल्म जन नायकन में नजर आएंगी। पूजा के इंस्टाग्राम पर 27.5 मिलियन फॉलोअर्स हैं।

मनोज बाजपेयी की फैमिली मैन 3 में नजर आ सकते हैं जयदीप अहलावत

जयदीप अहलावत की पाताल लोक के दूसरे सीजन की धमाकेदार वापसी के बाद दर्शक मनोज बाजपेयी की द फैमिली मैन के नए सीजन की रिलीज का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। इस बीच खबर है कि दोनों अभिनेता इस सीरीज में साथ काम करते नजर आ सकते हैं।

जयदीप के किरदार को लेकर हुई बात फिल्म फेयर की एक रिपोर्ट के मुताबिक जयदीप फैमिली मैन 3 में मनोज बाजपेयी के दुश्मन की भूमिका निभा सकते हैं। शो से जुड़े एक सूत्र ने प्रकाशन को बताया, द फैमिली मैन सीजन 3 में जयदीप की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। खबरों की मानें तो उनका किरदार मनोज बाजपेयी के श्रीकांत के खिलाफ होगा और दर्शकों को स्क्रीन के इन दो दिग्गजों को एक-दूसरे से दुश्मनी निभाते नजर आ सकते हैं। पाताल लोक 2 को मिल रही तारीफ जयदीप अहलावत को उनकी सीरीज पाताल लोक 3 को लिए चार साल के इंतजार के बाद जयदीप अहलावत पाताल लोक सीजन 2 में हाथी राम चौधरी के रूप में दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए वापस आ गए हैं। निर्माताओं ने हाल ही में जयदीप अहलावत के एक दिलचस्प पोस्टर के साथ नए सीजन की। इससे पहले एक रिपोर्ट में दावा किया गया था कि राज और डीके द फैमिली मैन सीजन 4 को साइन करेंगे। एक सूत्र के हवाले से कहा गया था कि तीसरे सीजन की शूटिंग चल रही है, वहीं चौथे सीजन के साथ सीरीज को साइन करने के बारे में चर्चा हुई है।

'कृष 4' में देरी पर राकेश रोशन, नहीं चाहता लोग मुझे फ्लॉप निर्देशक के तौर पर याद रखें

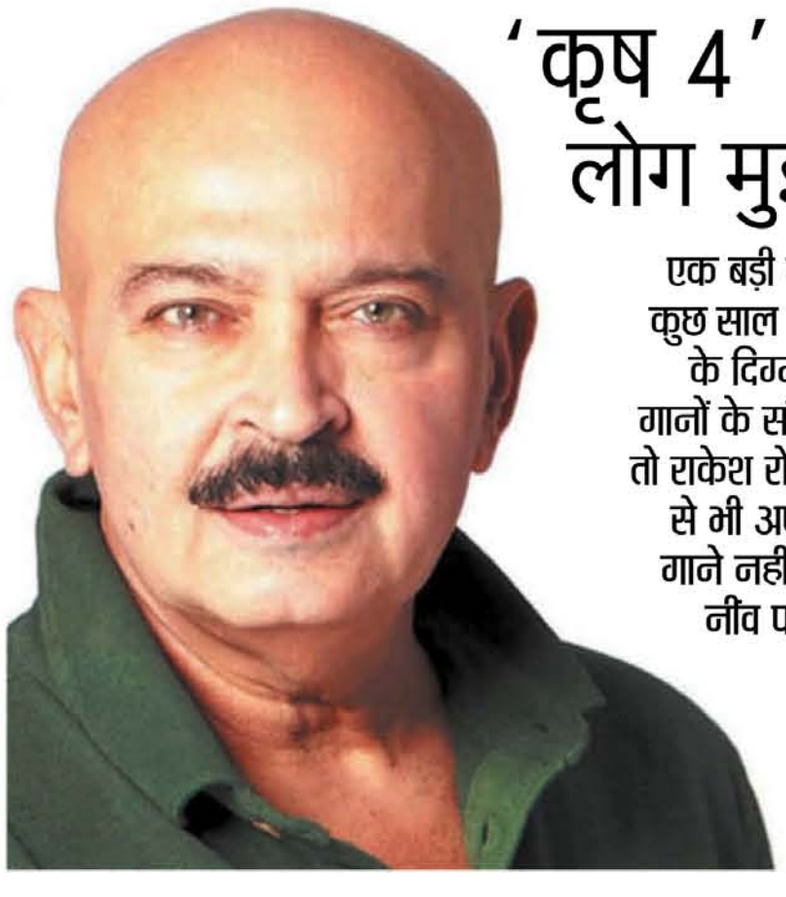

एक बड़ी म्यूजिक कंपनी ने कुछ साल पहले हिंदी सिनेमा के दिग्गज संगीतकारों के गानों के संग्रह प्रकाशित किए तो राकेश रोशन को उसमें ढूंढे से भी अपने पिता रोशन के गाने नहीं मिले। बस वहीं से नींव पड़ी नेटफ्लिक्स की वेब सीरीज 'द रोशन्स' की।

हिंदी सिनेमा को अपने संगीत, अपने निर्देशन और अपने अभिनय से रौशन करने वाले रोशन परिवार के दीये आज तक सबसे तेज जगमगा रहे हैं। आपको इस शब्द की या इस नाम की अहमियत पहली बार कब समझ आई?

मेरा असली नाम राकेश नागरथ है। मेरी पढ़ाई इसी नाम से हुई। तमाम सरकारी कागजात पर अब भी मेरा यही नाम है। ये उन दिनों की बात है जब मै फिल्मों में सहायक निर्देशक का काम तलाश रहा था। नाज सिनेमा बिल्डिंग में सारे निर्माताओं के दफ्तर हुआ करते थे और मैं वहां काम मांगने जाता तो दफ्तर के कर्मचारियों से कहता कि साहब को बोलो, रोशन साब के बेटे आए हैं मिलने। लोग मुझे बुलाते। कुर्सी से खड़े होकर हाथ मिलाते। बड़ा सम्मान देते। इस नाम की मैंने इतनी महत्ता देखी तो इसे अपने नाम के साथ जोड़ लिया।

ये बीते छह दशक जो बिना पिता के आपके बीते हैं, उनका संघर्ष कितनी बड़ी चुनौती रही आपके लिए?

संघर्ष तो अब भी है। बीते 70 साल से चला आ रहा है। आगे भी चलता ही रहेगा। जीवन में संघर्ष निरंतर है। अभी बात होती है क्या बनाऊं? 'कृष 4' की बात होती है तो उसको भी बनाने पर बात होती है कि लोगों को पसंद आएगी कि नहीं, आएगी। तो चुनौती तो है, वही जीवन है। 18 फिल्में बना चुके निर्माता राकेश रोशन के लिए क्या चुनौती हो सकती है? क्या ये चुनौती निर्देशक राकेश रोशन की फिल्म के 1000-1500 करोड़ रुपये कमाने की है?

हमें पैसे कमाने के लिए फिल्म नहीं बनाना है। ऐसा हम कभी नहीं करेंगे। हमारा डर ये है कि लोग हमें कैसे याद करेंगे? हमने 15-16 फिल्में बनाई हैं। एक निर्देशक को लोग उसकी आखिरी फिल्म से याद करते हैं। मैं नहीं चाहता कि लोग मुझे एक फ्लॉप फिल्म के निर्देशक के रूप मे याद करें। आपके पिता रोशन की संगीतबद्ध फिल्म 'सूरत और सीरत' के गाने 'बहुत दिया देने वाले ने तुझको' के पहले जो बांसुरी बजती है, वही आपकी फिल्म 'करण अर्जुन' के गाने 'ये बंधन तो प्यार का बंधन है' की धुन बनी है।

आपको संगीत से कितना लगाव है? कभी आपने भी कोई गाना लिखा या कंपोज किया?

'सूरत और सीरत' के गाने की जहां तक बात है, ये राजेश को पता होगा। मुझे नहीं लगता कि हमने 'सूरत और सीरत' फिल्म के किसी गाने से कोई धुन ली होगी। संगीत की बात करें तो हां, मैं गिटार बजाता हूं। पियानो बजाता हूं। फिल्मों का संगीत तो हम सब मिलकर ही तैयार करते हैं। लेकिन, अगर किसी एक गाने की ही बात करूं तो 'प्यार की कश्ती में' की धुन मेरी बनाई हुई है। ये गाना भी मेरा लिखा हुआ है।

संगीतकार रोशन के गानों में अध्यात्म का बहुत गहरा असर दिखता है। इसके बारे में क्या कहेंगे?

हमने हमेशा पारिवारिक फिल्में बनाई। ऐसी फिल्में जिन्हें पूरा परिवार साथ बैठकर देख सके। मैंने कभी कोई ओछी पिक्चर नहीं बनाई। हमारे गानों में एक बात होती है और हम इस पर शुरू से कायम रहे। अच्छे बोलों के साथ ही गाने बनाए। राजेश ने भी अच्छे बोलों के साथ ही गाने बनाए।

और, इस वेब सीरीज 'द रोशन्स' को बनाने का मकसद क्या रहा?

ये सीरीज हमने अपनी तारीफ के लिए कतई नहीं बनाई है। हमने इस सीरीज में ये बताने की कोशिश की है, हमने तब से लेकर आज तक किस तरह के संघर्ष सिनेमा में देखे हैं। अगर सबसे तारीफ ही करानी होती तो फिर इस सीरीज को बनाने का कोई मतलब ही नहीं था।

प्राधिकरण ने दी किसानों को सौगात

विधायक पंकज सिंह ने बंटवाए भूखंड आवंटन-पत्र

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा के किसानों को प्राधिकरण ने बड़ी सौगात दी है। प्राधिकरण ने किसानों को आबादी के भूखंडआवंटन पत्र वितरण करना शुरू कर दिया है।

नोएडा प्राधिकरण के सेक्टर-6 स्थित कार्यालय में किसानों को नोएडा के विधायक पंकज सिंह ने आबादी के भूखण्ड आंवटन पत्र वितरण किए। लगभग 24 किसानों को यह आवंटन किया गया। शेष पात्र किसानों को भी आगे चिन्हित कर भूखण्ड प्रदान किये जाऐंगे।

किसानों को आवंटन पत्र बांटने के बाद विधायक पंकज सिंह ने नोएडा प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी लोकेश एम तथा सभी अपर मुख्य कार्यपालक अधिकरियों एवं सभी विभागों डी.जी.एम. के साथ समीक्षा बैठक की।

बैठक में नोएडा शहर में प्रगतिरत विकास कार्यों व भविष्य में आने वाले नए प्रोजक्ट्स के कार्यों की जानकारी ली। समीक्षा बैठक में गांवों से आ रही सीवर की समस्या, गावं व सैक्टर में पेयजल, सड़कों एवं सफाई की समस्या, विद्युत व्यवस्था, ट्रैफिक व्यवस्था, उद्यान आदि के संबंध चर्चा की।

पौवारी गांव में आधुनिक गौशाला का लोकार्पण

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने साढ़े 6 करोड़ रूपये खर्च कर बनाई गौशाला

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। जेवर विधानसभा क्षेत्र के विधायक धीरेंद्र सिंह ने एसीईओ श्रीलक्ष्मी वीएस की मौजूदगी में ग्राम पौवारी में नवनिर्मित गोशाला का लोकार्पण किया। इस अवसर पर बेटियों और खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करते हुए विधायक धीरेंद्र सिंह ने कबड्डी खिलाड़ी बेटियों को आगे रखते हुए उन्हीं से फीता कटवाया।

गोवंशों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने दूसरी गोशाला पौवारी गांव में बनवाई है। लगभग 18200 वर्ग मीटर में निर्मित इस गोशाला में करीब 500 गोवंश आराम से रह सकेंगे। भविष्य में जरूरत के अनुसार इसका विस्तार किया जा सकेगा। पौवारी के इस गोशाला में शेड, भूसाघर, चिकित्सक रूम, गार्ड रूम, कर्मचारियों के रूम, बाउंड्री वॉल आदि सुविधाएं विकसित की गई है। इस नव निर्मित गोशाला में गायों और नंदी को रखने के लिए अलग-अलग व्यवस्था की गई है। इस गोशाला को बनाने में करीब साढ़े 6 करोड़ रुपये खर्च हुए है। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की तरफ से एक अन्य गोशाला जलपुरा में भी संचालित है।

इस मौके पर जेवर विधायक धीरेंद्र सिंह ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि 'गौ संरक्षण और संवर्द्धन के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश सरकार प्रतिबद्ध है। गोवंश हमारे समाज और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं। गोवंश के संरक्षण की जिम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं है, हमारी भी है।'

जेवर विधायक ने कहा कि गाय सदियों से हमारी आस्था का प्रतीक रही है, क्योंकि गौ माता हमारे अतीत, हमारी संस्कृति और हमारे धर्म से जुड़ी हुई है। इसलिए हमें हर हाल में गौ माता के संरक्षण और संवर्धन के लिए आगे आना ही होगा और अगर आप अपने घर पर एक गाय को रखेंगे तो वह आपको आपदाओं से बचाएगी और आपको सुरक्षित भी रखेगी।

लोकार्पण के इस अवसर पर पूर्व मंत्री हरीशचंद्र भाटी, ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की एसीईओ श्रीलक्ष्मी वीएस, ओएसडी अभिषेक पाठक, महाप्रबंधक प्रोजेक्ट एके सिंह, महाप्रबंधक गोशाला आरके भारती, वरिष्ठ प्रबंधक नागेंद्र सिंह और प्राधिकरण के अन्य अधिकारी व कर्मचारी के साथ ही कासना मंडल अध्यक्ष श्री दिनेश भाटी, राम सिंह नेता जी, राकेश भाटी, श्रीनिवास प्रधान जी, मनोज भाटी डाढा, मास्टर उदयवीर सिंह, मनोज गर्ग, संजय प्रताप सिंह, एडवोकेट अमित भाटी, अमित शर्मा, नीरज शर्मा, जबर सिंह, शशांक भाटी, संजय सिंह चेयरमैन नगर पंचायत बिलासपुर, चैनपाल भाटी, भागवत भाटी, विश्वजीत शर्मा, बाबा मोहरी, गौरव नागर, सर्वेंद्र कपासिया आदि मौजूद रहे।

श्रीराम कथा आज से, बैंड-बाजे के साथ निकली कलश यात्रा

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा में श्री राम कथा का आयोजन आज से 9 फरवरी 2025 तक शाम 3 बजे से 6 तक रामलीला मैदान नोएडा स्टेडियम सेक्टर 21 में किया जाएगा। इसी क्रम में दिव्य श्रीरामकथा से पहले शुक्रवार को नोएडा स्टेडियम में बैंड बाजे के साथ कलशयात्रा निकाली गई। इसमे सैंकड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया। महिलाओं के सिर पर कलश थे जबकि पुरुषों के हाथ मे मंजीरा बज रहे थे। इस दौरान बंसीधर दास के नेतृत्व में इस्कॉन नोएडा की टीम और वाईएसएस फाउंडेशन के वोलेंटियर भी सुरक्षा व्यवस्था के लिए और नोएडा पुलिस व ट्रैफिक पुलिस भी साथ साथ चल रहे थे।

राम कथा का वाचन/ गायन प्रख्यात मानस मर्मज्ञ पूज्य संत श्री विजय कौशल जी महाराज द्वारा किया जाएगा। कलश यात्रा गेट नम्बर सात से शुरू हुई और सेक्टर 12 में पेट्रोल पंप के सामने से निकलकर सेक्टर 22 और एडोब चौराहे से सेक्टर 25 की तरफ घूमी। गेट नम्बर 4 से कलश यात्रा ने स्टेडियम में प्रवेश किया। इसके बाद वापसी कथा स्थल पर समापन हुआ। कलश यात्रा के दौरान भगवान श्रीराम दरबार और पवित्र श्री रामायण रथ में विराजमान थे। समापन के बाद सभी कलशों को मंच के साथ रख दिया गया।

कलश यात्रा में नवैद्य शर्मा, परमात्मा शरण बंसल, धर्मपाल गोयल, एन के अग्रवाल, एस एन गोयल, प्रमोद शर्मा, संजय गोयल, संजय गुप्ता, संदीप अग्रवाल, बलराज गोयल, महेंद्र शाह, विमल अग्रवाल, मुकुल वाजपेयी, राजीव, संदीप तायल, पवन शर्मा, संजय बाली, अजय पुंडीर, विनय अग्रवाल आदि मौजूद रहे।

SAHARA BUILDER & PROPERTIES™
ISO 9001:2008
PROPERTIES AVAILABLE FOR SALE IN GREATER NOIDA

RESIDENTIAL

S.No	Plot Size	House No./Block	Price	Other Details
1	300 Sq.mtr	C-291, Sigma - 02	92 Lakh	Completion, S/W
2	200 Sq.mtr	G-660, Alpha - 02	1.25 Cr.	Completion,N/E & 18 MTR Road
3	60 Sq.mtr	G-439, Gamma - 02	52 Lakh	Single Story, Corner(18X12),N/E
4	1265 Sq.ft	Silver City - 02, PI-1	55 Lakh	2+1 BHK Apartment
5	29.76 Sq.ft	3TF/Block-60, Sector - 10	9 Lakh	1 BHK, Top Floor
6	2450 Sq.ft	Royal Apartment(Duplex), Sigma - 04	On Request	4BHK, Low rise, Lift
7	237 Sq.mtr	C-363, Sector - 03(EXTN)	1.40 Cr.	50% Completion, Corner, N/ W
8	110 Sq.mtr	5% Plot, CHI PHI EXTN	23000/Sq.Mtr.	Corner Plot
9	131 Sq.mtr	5% Plot, CHI PHI EXTN	23000/Sq.Mtr.	Corner Plot
10	930 Sq.mtr	5% Plot, CHI PHI EXTN	14000/Sq.Mtr.	Corner Plot

COMMERCIAL

S.No	Shop Size	Complex Address	Price	Other Details
1	29.5 Sq.mtr	Block - C, Alpha - 01	95 Lakh	G.Floor, Corner, N/E
2	463 Sq.ft	NQI Plaza, Alpha - 01	95 Lakh	G.Floor, N/E
3	19.5 Sq.mtr	Kadamba Shopping Complex, Gamma -01	40 Lakh	G.Floor, N/W
4	8.15 Sq.mtr	Kiosk, P-3	22 Lakh	24 Mtr Road, N/W

CONTACT US :+919810441077, +919710441077
Add- Office No. 205, Sunrise Tower, Alpha 1 Commercial Belt, Gr.Noida, G.B.Nagar, U.P-2010308

डीएम की अध्यक्षता में उद्योग बंधु की बैठक सम्पन्न

नोएडा (चेतना मंच)। जिलाधिकारी गौतमबुद्धनगर मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में कैंप कार्यालय सेक्टर-27 नोएडा के सभागार में उद्योग बंधु समिति की बैठक संपन्न हुई। जिलाधिकारी द्वारा बैठक की अध्यक्षता करते हुए उद्यमी संगठन से जुड़े हुए प्रतिनिधियों की जलभराव, विद्युत कटौती, ट्रैफिक जाम, ई0एस0आई0 अस्पताल निर्माण, टूटी सड़के, अतिक्रमण जैसी आदि समस्याओं का बहुत ही गहनता के साथ अनुश्रवण किया गया।

जिलाधिकारी ने संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि जनपद के औद्योगिक विकास में उद्यमियों का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। इसलिए उद्यमी प्रतिनिधियों के उद्योग से जुड़ी हुई जो समस्या आज

उद्योग बंधु की बैठक में रखी गई हैं। संबंधित विभाग के अधिकारी गण अभियान चलाकर सर्वोच्च प्राथमिकता के आधार पर उनका निराकरण कराने की कार्रवाई सुनिश्चित करेंगे एवं प्रदेश सरकार के द्वारा जनपद के औद्योगिक विकास को गति प्रदान करने के उद्देश्य से उद्यमियों के लिए संचालित सभी योजनाओं का लाभ शासन की मंशा के अनुरूप उद्यमी बंधु तक प्रमुखता के साथ पहुंचाए जाने की कार्रवाई भी संबंधित विभाग के अधिकारियों के द्वारा सुनिश्चित की जाए। जिलाधिकारी ने उद्योग बंधुओं के सम्मुख आने वाली समस्याओं का तत्काल प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से संबंधित अधिकारियों आवश्यक दिशा निर्देश भी प्रदान किये।

बैठक मे उपायुक्त उद्योग अनिल कुमार, श्रम विभाग, सिंचाई विभाग, पुलिस विभाग व प्राधिकरणों के अधिकारी गण अन्य संबंधित विभागीय अधिकारियों के अलावा उद्यमी संगठन के प्रतिनिधियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

खतरनाक षड़यंत्र : प्रेमिका को पति-पत्नी ने कार से कुचलकर मार डाला

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। ग्रेटर नोएडा में एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है। थाना नॉलेज पार्क पुलिस ने एक महिला को कार से कुचलकर हत्या करने के मामले का खुलासा करते हुए आरोपी पति-पत्नी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके कब्जे से वारदात में इस्तेमाल स्कॉर्पियो कार और मृतका का मोबाइल फोन बरामद किया है। हत्या को दुर्घटना का रूप देने की कोशिश की गई थी, लेकिन पुलिस की जांच में पूरा षड्यंत्र सामने आ गया।

डीजीपी ग्रेटर नोएडा साद मिया खान ने बताया कि चौड़ा रघुनाथपुर सेक्टर-22 निवासी एक महिला ने अपनी बेटी काजल कस सड़क दुर्घटना में मौत का मामला दर्ज कराया था। मामले की जांच में हैरान करने वाला खुलासा हुआ।

डीसीपी ने बताया कि मृतका काजल चौहान ग्रेटर नोएडा में रह रही थी और आरोपी शिव पांडे के साथ एक साल से पति-पत्नी की तरह संबंध में थी। शिव पांडे पहले से शादीशुदा था, लेकिन उसने काजल से यह सच छुपाया था। जब उसकी पत्नी प्रतिमा को इस रिश्ते के बारे में पता चला, तो दोनों महिलाओं के बीच विवाद बढ़ गया। इसी दौरान काजल ने शिव पांडे से उसकी संपत्ति और स्कॉर्पियो कार में हिस्सा मांगना शुरू कर दिया।

पत्नी को जब यह बात पता चली, तो दोनों ने मिलकर काजल को रास्ते से हटाने की योजना बनाई। 16 जनवरी 2025 को शिव पांडे ने काजल को तुगलपुर बुलाया, जहां वह अपनी पत्नी प्रतिमा के साथ स्कॉर्पियो में पहुंचा। पहले से रची साजिश के तहत उसने काजल पर तेज रफ्तार स्कॉर्पियो चढ़ा दी, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। वारदात को अंजाम देने के बाद दोनों आरोपी मौके से फरार हो गए।

काजल की मां ने 18 जनवरी को थाना नॉलेज पार्क में अज्ञात कार चालक के खिलाफ बेटी की मौत की शिकायत दर्ज कराई थी। पुलिस ने जब मामले की जांच की, तो सीसीटीवी फुटेज और अन्य सबूतों से शिव पांडे और उसकी पत्नी प्रतिमा की संलिप्तता सामने आई। 31 जनवरी को पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया और हत्या में इस्तेमाल स्कॉर्पियो कार व काजल का मोबाइल फोन भी बरामद कर लिया।

शुरुआत में पुलिस ने इसे दुर्घटना मानते हुए मामूली धाराओं में मामला दर्ज किया था, लेकिन जांच के बाद इसे हत्या का मामला पाया गया। इसके बाद मुकदमे में धारा 103(1)/238(क) बीएनएस जोड़ी गई और पहले दर्ज धारा 281/106 बीएनएस को हटा दिया गया।

GRV BUILDCON
Concept to reality
ARCHITECTURE/ CONSTRUCTION / INTERIORS
WE DON'T DESIGN HOME/ OFFICE
WE DESIGN DREAMS!

Certified by :
ISO 9001 CERTIFIED
startupindia
MSME MICRO, SMALL & MEDIUM ENTERPRISES
Contact Us : 9999472324, 9999082512
www.grvbuildcon.com